Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और अपने हाथों से अपने आप को हलाक मत करो। और उपकार करो अल्लाह उपकार करने वालों को पसन्द करता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 42

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

8 सफर 1439 हिजरी कमरी 18 इख़ा 1397 हिजरी शमसी 18 अक्तूबर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

कुरआन मजीद हिक्मतों तथा मआरिफ का सार है। और बेकार बातों तथा फज़ूल बातों का कोई जख़ीरा अपने अन्दर नहीं रखता।

कुरआन करीम एक इस प्रकार की किताब है जिस में हर प्रकार के मआरिफ तथा ज्ञान भरे हुए हैं

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कुरआन मजीद की सारगर्भिता

कुरआन मजीद हिक्मतों तथा मआरिफ का सार है। और बेकार बातों तथा फज़ूल बातों का कोई जख़ीरा अपने अन्दर नहीं रखता। प्रत्येक काम की तफ्सीर वह ख़ुद रखता है और हर एक तरह की ज़रूरतों का सामान इस के अन्दर मौजूद है। वह हर एक पहलु से निशान और चमत्कार है। अगर कोई इस बात का इंकार करे तो हम हर पहलु से एक का चमत्कार दिखाने के लिए तैय्यार हैं। आजकल तौहीद और अल्लाह तआला की हस्ती पर बहुत हमले हो रहे हैं। ईसाइयों ने बहुत कुछ ज़ोर मारा और लिखा है परन्तु जो कुछ कहा और लिखा वह इस्लाम के ख़ुदा के बारे में ही लिखा है न कि एक मुर्दा सलीब पर लटकाए गए, असहाय ख़ुदा के बारे में। हम दावा से कहते हैं कि जो आदमी अल्लाह तआला की हस्ती और वुजूद पर कलम उठाएगा उस को अन्त में उसी ख़ुदा की तरफ आना होगा जो इस्लाम ने पेश किया है क्योंकि प्रकृति के एक-एक पत्ते में इस का पता मिलता है और अपनी फितरत में इन्सान उसी ख़ुदा का नक्श अपने अन्दर रखता है। अत: इस प्रकार के अदिमयों का कदम जब भी उठेगा वह इस्लाम के ही मैदान की तरफ उठेगा यह भी तो एक महान चमत्कार है।

कुरआन का चैलन्ज

अगर कोई आदमी कुरआन करीम के इस चमत्कार का इंकार कर दे तो एक ही पहलु से हम आज़मा सकते हैं। अर्थात अगर कोई आदमी कुर्आन करीम को ख़ुदा का कलाम नहीं मानता तो इस रौशनी और साइंस के ज़माने में इस प्रकार का दावा करने वाला ख़ुदा तआला की हस्ती के तर्क लिखे इस के मुकाबला में हम वे तर्क कुरआन करीम से ही निकाल कर दिखा देंगे और अगर वह आदमी अल्लाह तआला की तौहीद के बारे में दलीलें लिखे तो हम वे सब दलीलें कुरआन करीम से निकाल कर दिखा देंगे। फिर वह इस प्रकार की दलीलें लिखे जो कुरआन करीम में नहीं पाई जातीं या उन सदाकतों तथा नेक शिक्षाओं पर दलीलें लिखे जिन के बारे में उस का विचार हो कि कुरआन करीम में वह नहीं पाई जाती। तो हम इस तरह के आदमी को स्पष्ट रूप में दिखा देंगे कि कुरआन शरीफ का दावा فِیْهَا كُتُبٌ قَیِّمَةٌ (अल्बय्यन: 4) कैसा सच्चा और साफ है और या असल फितरती धर्म के बारे में दलीलें देखना चाहे तो हम हर पहलु से कुरआन करीम का चमत्कार साबित कर के दिखा देंगे। और बतला देंगे कि सारी सदाकतें और पवित्र शिक्षाएं कुरआन मजीद में मौजूद हैं।

अत: कुरआन करीम इस प्रकार की किताब है जिस में सब प्रकार के मआरिफ और इसरार मौजूद हैं। परन्तु उन को प्राप्त करने के लिए मैं फिर कहता हूं कि उसी नेक ताकत की ज़रूरत है। अत: ख़ुद अल्लाह तआला ने फरमाया कि لَا یَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अल्वाकिय: 80) इसी तरह उस का सारगर्भिता में (उस का मुकाबला करना असंभव है) जैसे सूरह फातिहा की मौजूदा क्रम छोड़ कर कोई ओर क्रम इस्तेमाल करो तो उच्च अर्थ और उच्च लक्ष्य जो इस क्रम में मौजूद हैं संभव नहीं कि किसी दूसरे क्रम में वर्णन हो सके। कोई भी सूरत देख लो قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ही क्यों न हो जिस कदर नर्मी और सम्मान का ध्यान रख कर इस में मआरिफ और हकायक वर्णन किए गए हैं, वह कोई दूसरा वर्णन नहीं कर सकेगा यह भी केवल कुरआन का चमत्कार ही है। मुझे हैरत होती है जब कुछ अज्ञान "मकामाते हरीरी" या "सब्अ मुअल्लका" को अनुपमेय और अद्वित्तीय कहते हैं। और इस तरह कुरआन करीम पर हमला करना चाहते हैं। वह प्रथम तो इतना नहीं समझते के हरीरी के लेखक ने कहीं भी यह दावा नहीं किया कि वह अद्वित्तीय है और दूसरा यह कि हरीरी का लेखक ख़ुदा कुरआन करीम के चमत्कार को मानने वाला था।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 52 से 53 प संकरण 2003)

124 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 28, 29, 30 दिसम्बर 2018 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 124 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 28, 29 और 30 दिसम्बर 2018 ई.(शुक्रवार, शनिवार व रविवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

शेष पृष्ठ 12 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-11)

☆ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : ये लोग समझते हैं कि जब दुनिया खत्म होने के क़रीब होगी तो मसीह आसमान से नाज़िल होगा और महदी पृथ्वी में ही पैदा होगा। उन के निकट महदी और मसीह दो अलग-अलग व्यक्तित्वों के नाम हैं जो एक-दूसरे के साथ मिल कर इस्लाम का विरोधियों का ख़ात्मा करेंगे। सवाल यह उठता है कि जब दुनिया वैसे ही खत्म होने को हो रही होगी तो इन दोनों का क्या काम है? हम यह कहते हैं कि अंतिम समय से मुराद वे दिन नहीं जब दुनिया खत्म हो रही होगी बल्कि इससे मुराद चौदहवीं सदी है। क्योंकि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि तेरहवीं शताब्दी के दौरान, मसीह और महदी प्रकट होंगे। फिर कुरआन में भी अंतिम दिनों के लक्षणों का वर्णन किया गया है। कुरआन करीम में आता है कि आख़री दिनों में आवागमन के माध्यम बहुत हो जाऐंगे। और यह निशान आज पूरा होता हम देख रहे हैं। ऊंटों और घोड़ों की सवारी को छोड़ दिया गया है और उनकी जगह समुद्री और हवाई जहाज़, कारों, ट्रेनों और बसों ने ले ली। इसी तरह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक और निसानी के पेशगोई फरमाई कि उस ज़माने में रमज़ान के महीने की विशेष तिथियों में चन्द्र और सूर्य ग्रहण लगेगा और 1894 ई में रमज़ान के महीने में यह निशान पूरा हुआ जब चाँद ग्रहण लगने के दिनों में पहले दिन चाँद ग्रहण लगा और फिर इसी माह की अट्ठाईस तारीख़ सूर्य ग्रहण लगा। अत: 1894 में पेशगोई के अनुसार यह दोनों ग्रहण एक ही महीने में धरती के पूर्वी भाग पर लगा और फिर 1895 ई में ग्रहण का निशान पश्चिमी भाग पर लगा और अन्य देशों को देखा गया। अत: जब यह निशान प्रकट हुए, तो दावा करने वाला भी मौजूद था। हम कहते हैं कि जब निशान पूरे हो चुके और दावा करने वाला भी मौजूद होता था, तो इसे स्वीकार न करने का कोई सवाल ही नहीं रहता।

विश्वविद्यालयों के कुछ प्रोफेसरों और अन्य मेहमानों की हुज़ूर से मुलाकात।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

दिनांक 18 /मई 2016 बुधवार

सुबह तीन बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे

मेहमानों से मुलाकात

आज कार्यक्रम के अनुसार विश्वविद्यालयों के कुछ प्रोफेसरों साहिबान और कुछ अन्य मेहमानों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात थी।

निम्नलिखित प्रोफेसर और दूसरे मेहमान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात के आए हुए थे और मुलाकात कक्ष में हुज़ूर अनवर के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

श्री सिमन सोर्गेफ्रेई (प्रोफेसर) श्रीमान फ्रेडरिक ब्रुसी (सहायक व्याख्याता स्टॉकहोम विश्वविद्यालय) श्रीमान Jenny Berglund (एसोसिएट प्रोफेसर) David Thurjell (प्रोफेसर) Ferdinando Sardeua (व्याख्याता) Mr Lizzie Oved Scheja (स्वीडन में जयूश संस्कृति के संस्थापक और निदेशक) Mr ULF lindgren (चर्च प्रतिनिधि)श्रीमान टॉरबॉर्न पर्सन (रोटरी क्लब आर्लैंड कैपिटल) श्रीमान मेनार्ड गेबर (कैंटोर, जुडिस्का, फोर्समलिंगेन) इन मेहमानों के अतिरिक्त भारत और इज़राइल दूतावास के राजदूत भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ प्रोग्राम के अनुसार सुबह दस बजे पधारे।

मुलाकात की शुरुआत में वहां मौजूद प्रोफेसरों ने अपना परिचय पेश किया। सबसे पहले, स्वीडन के एक प्रोफेसर ने अपना परिचय करवाते हुए कि वह मध्य पूर्व में काफी समय रह चुके हैं।

इस के बाद, एक महिला प्रोफेसर ने अपना परिचय करवाते हुए कहा कि वह तेल अवीव (इज़राइल) से संबंधित है लेकिन वह पिछले बीस वर्षों से स्वीडन में है।

उसके बाद, एक प्रोफेसर ने अपना परिचय शुरू किया और कहा कि मैं इस समय यहूदी समुदाय के लिए काम कर रहा हूं। मैं ख़त्ने भी करा हूं, लेकिन जो लोग मेरे पास सब से अधिक आते हैं वे मुसलमान हैं। यही कारण है कि मैं मुसलमानों के बहुत करीब से जानता हूं।

इस के बाद एक दूसरा, सहयोगी प्रोफेसर महिला ने ख़ुद का परिचय करवाते हुए कहा कि "मैं यहां स्वीडन में एक विश्वविद्यालय में धर्म पढ़ाती हूं।" इसी तरह, मैं वारविक विश्वविद्यालय यू. के में एक अतिथि प्रोफेसर भी हूं। इस के अतिरिक्त मैं इस्लामी शिक्षा पर भी शोध कर रही हूं।

इस के बाद एक दूसरे प्रोफेसर ने ख़ुद का परिचय पेश करते हुए कहा कि उसका विषय ईरान का इतिहास और शिया समुदाय है।

स्टॉकहोम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने ख़ुद का परिचय करवाते हुए कहा कि वे धर्मों का इतिहास पढ़ाते हैं। उन्होंने इस्लाम और मध्य पूर्वी ऐशिया के अध्ययन में विशेषज्ञता प्राप्त कर रहा है।

स्टॉकहोम के एक अन्य विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने कहा कि वह भी धर्मों का इतिहास पढ़ाते हैं और वह दक्षिण एशियाई धर्मों पर विशेषज्ञता प्राप्त कर रहे हैं।

इस संक्षिप्त परिचय के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ पूछा कि इसका मतलब है कि आज यहां सभी प्रोफेसरज़ ही मौजूद हैं। जिस पर एक अतिथि ने कहा कि उनके अलावा अन्य प्रोफेसर हैं और स्वीडन के एक चर्च के पादरी भी हैं। और उसने बताया कि मिस्र में तीन साल रह कर आए हैं।

इसके अलावा, इस मुलाकात में स्वीडन में भारतीय और इज़राइली दूतावास के रादजूत भी शामिल हुए।

उसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने सवाल किया कि स्वीडन में जावन की स्थिति क्या है?

इस पर एक प्रोफेसर ने कहा: मुझे लगता है कि यदि सामान्य रूप से देखें, तो वर्तमान अवधि में कुछ बदलाव हो रहे हैं। इन का प्रभाव दूसरे यूरोप की तरह स्वीडन पर भी हो रहा है। और यदि व्यक्तिगत रूप से देखा जाए तो आप सही रास्ते पर हैं, तो स्वीडन में जीवन गुज़ारना आसान है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के पूछने पर एक प्रोफेसर ने बताया कि स्वीडन में यहूदियों की आबादी लगभग 20 हज़ार है और उनमें से आधे Greater Stockholm में ही आबाद हैं। इसके अलावा यहूदियों का समुदाय गोथेनबर्ग और माल्मो में भी मौजूद है। लेकिन ज्यादातर यहूदी स्टॉकहोम में रहते हैं।

उसके बाद, एक प्रोफेसर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से पूछा कि स्वीडन में आपका निवास कैसा रहा?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : पिछले दिनों बहुत व्यस्त रहे। जमाअत के कई लोग मिलने के लिए आ रहे हैं। कुछ आयोजन आयोजित हुए माल्मो में एक मस्जिद का उद्घाटन हुआ।

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

पिछले दिनों अल्लाह तआला ने जलसा सालाना जर्मन और बेल्जियम में भाग लेने की तौफीक़ प्रदान की। दोनों जलसे अल्लाह तआला की कृपा से बहुत बरकत वाले थे।

जर्मनी की जमाअत में अब बहुत सीमा तक जलसा का प्रबन्ध व्यवस्थित हो गया है। बाहर से मेहमान वहां भी बहुत ज्यादा हैं। आसपास के पूर्वी यूरोप के अलावा, लोग कुछ अन्य देशों से जलसा में शामिल होने आते हैं। इस साल तो अफ्रीका के कुछ देशों से भी वहां जलसा में लोग शामिल थे। और हमेशा की तरह, जैसा की अल्लाह तआला के फज़्ल से हर जलसा में होता है बाहर से आकर आने वाले मेहमान अच्छा प्रभाव हमारे जलसों से लेकर जाते हैं अतः जर्मनी में, बेल्जियम में भी जो लोग जलसा में शामिल हुए उन्होंने इस बात को वर्णन किया। जमाअत के बारे में अच्छी प्रतिक्रियाएं व्यक्त की।

जर्मनी और बेल्जियम के जलसा सालाना के बारे में मेहमानों और शामिल होने वाले के ईमान वर्धक वर्णन और इस बारे में जमाअत के लोगों को नसीहतें।

आज से ख़ुद्दामुल अहमदिया की इज्तिमा भी शुरू हो रहा है इस हवाले से भी सभी शामिल होने वाले ख़ुद्दामों को भी याद दिला देता हूं कि अपने व्यवहारों को इस प्रकार का रखें के लोगों पर नेक प्रभाव छोड़ने वाले हों। अल्लाह तआला इन के इज्तिमा को भी बरकतों वाला बनाए।

दोनों जलसों में काम करने वालों का भी मैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि उन्होंने अपनी ताकतों और सामर्थ्य के अनुसार जलसा में शामिल होने वाले मेहमानों की सेवा की। इसी प्रकार वहां शामिल होने वाले जो अहमदी लोग थे उन का भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूं।

इसी तरह काम करने वालों का भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि अल्लाह तआला ने उन्हें सेवा करने का अवसर प्रदान किया और भविष्य के लिए अपने आप को तैय्यार करें कि जो कमज़ोरियां और कमियां रह गई हैं और देखें कि उन को अगले सालों में किस प्रकार दूर करना है।

मैं कुछ मेहमानों से प्रतिक्रियाएं प्रस्तुत करता हूं जिन से प्रकट होता है कि जलसा की बरकतों का केवल अहमदियों पर ही प्रभाव नहीं होता बल्कि ग़ैरों पर भी प्रभाव होता है।

आदरणीय सय्यद हसनात अहमद साहिब कैनेडा, आदरणीया शौकत साहिबा पत्नी हाफिज़ कुदरतुल्लाह साहिब, भूतपूर्व मुबल्लिग़ हालैण्ड तथा इंडोनेशिया, और आदरणीया चौधरी ख़ालदि सैफुल्लाह साहिब नायह अमीर जमाअत आस्ट्रेलिया की वफात, मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 सितम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले दिनों अल्लाह तआला ने जलसा जर्मनी और बेल्जियम में भाग लेने की तौफीक़ दी और जैसा कि दुनिया में एम.टी.ए देखने वालों ने देखा होगा, आपने भी देखा होगा, दोनों जलसे अल्लाह तआला की कृपा से बहुत बरकत वाले थे। जर्मनी में जमाअत बड़ी है, और कई सालों से हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे जर्मनी के जलसों में शामिल हो रहे थे, फिर मैं इसमें शामिल हो रहा हूं। इस अर्थ में, जर्मनी की जमाअत में अब जलसा का प्रबन्ध बहुत सीमा तक दृढ़ हो चुका है। बाहर से आने वाले मेहमान भी बहुत आते हैं। आसपास के पूर्वी यूरोप के अलावा, लोग कुछ अन्य देशों से जलसा में शामिल होने आते हैं। इस साल तो अफ्रीका के कुछ देशों से भी वहां जलसा में लोग शामिल थे। और हमेशा की तरह, जैसा की अल्लाह तआला के फज़्ल से हर जलसा में होता है बाहर से आकर आने वाले मेहमान अच्छा प्रभाव हमारे जलसों से लेकर जाते हैं और इस को प्रकट भी करते हैं अतः जर्मनी में, बेल्जियम में भी जो लोग जलसा में शामिल हुए उन्होंने इस बात को वर्णन किया। जमाअत के बारे में अच्छी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं।

जलसा की व्यवस्था और सामान्य माहौल की बहुत प्रशंसा की कि हमें यहां आकर यह पता चला है या कुछ लोग जो पहले आ चुके हैं, दोबारा आए उन्होंने इस बात की अभिव्यक्ति व्यक्त की है कि आपके जलसों से पता चलता है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा क्या है और आजकल मीडिया में इस्लाम के बारे में दुनिया को बहुत बुरी छवि प्रस्तुत की जाती है जो एक बहुत ही भयानक छवि है, इस्लाम की असली शिक्षा और सच्चे मुसलमान का व्यवहार इस के बिल्कुल उलट है। जलसा में शामिल हो कर ये लोग हर कार्यकर्ता और बल्कि हर अधिकारी को बहुत ध्यान से देखतें हैं, कि उनके कर्म कैसे हैं। शिक्षा अगर अच्छी भी है, लेकिन इस शिक्षा पर विश्वास रखने वालों का कर्म अच्छे न हों तो फिर इस शिक्षा का नेक नमूना स्थापित नहीं रहता। अतः इस लिहाज़ से जलसा से सारे काम करने वाले जैसा कि पहले भी कह चुका हूं कि काम करने वाले और शामिल होने वाले एक ख़ामोश तब्लीग़ में हिस्सा ले रहे होते हैं। ग़ैर-मुसलमानों के दिमाग़ से इस्लाम के बारे में गलत धारणाओं और गलत शंकाओं को दूर कर रहे होते हैं और मुसलमानों के दिलों के तथा कथित उलमा ने जो ग़लत फहमियां पैदा की हुई हैं उसे दूर कर रहे होते हैं। लोग तो हमें यही कहते हैं न कि अहमदी नऊज़ बिल्लाह मुस्लिम नहीं हैं, कलिमा नहीं पढ़ते। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़री नबी नहीं मानते। बल्कि यहां तक आरोप है कि इन का कुरआन करीम अलग है लेकिन बहुत सारे मुसलमान भी जब अहमदियों से मिले और जलसे के माहौल को देखें तो ये सारे ग़लत बातें दूर हो जाती हैं। और इस बात को व्यक्त भी करते

हैं। जर्मनी में आने वाले मेहमानों ने इस बात को व्यक्त किया। अरब देशों से भारत से, पाकिस्तान से भी दूसरे स्थानों से भी। इसी प्रकार, ये शामिल होने वाले काम करने वाले स्वयंसेवकों के काम की भी सराहना करते हैं, और उनके व्यवहार की सराहना करते हैं। बेल्जियम के जलसा में, भी अल्लाह तआला के फज़्ल से ये सारी चीज़ें देखने में आईं और जलसा भी बहुत बरकत वाला और सफल जलसा था। एक छोटी जमाअथ होने के बावजूद, और इस तथ्य के बावजूद कि बेल्जियम की जमाअत के मुकाबले में अधिक मेहमान थे, जिस का मैं पहले भी उल्लेख कर चुका हूं उनका अन्तिम आयोजन था उन्होंने सभी कार्यों को बहुत अच्छी तरह से संभाला था। मैं चौदह साल बाद उन के जलसा में शामिल हुआ हूं। इस लिहाज़ा से उन सको बहुत चिंता थी। अनुभव न होने के कारण उन्हें बहुत घबराहट भी बहुत थी, लेकिन उन्होंने अल्लाह तआला की कृपा से उत्तम व्यवस्था की थी। वहाँ भी जो ग़ैर मुस्लिम आए थे बेशक थोड़े थे परन्तु उन्होंने जलसा की व्यवस्था और जमाअत के कामों की सामान्य रूप से जो जमाअत वहाँ कर रही है बड़ी सराहना की और जमाअत के कार्यों और शांति स्थापित करने की जो दुनिया में कोशिश है उस की सामान्य रूप से प्रशंसा की। अत: जमाअत जहां की भी हो, जहां भी हो अल्लाह तआला की कृपा से दूसरों पर अपने नेक प्रभाव डालती है और तब्लीग़ का माध्यम बनती है। इसलिए प्रत्येक जमाअत के आदमी को इस बात को हमेशा सामने रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की बैअत में आकर उन्हें अपनी अवस्थाओं को बेहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिए। हमारा हर इज्तिमा और जलसा जिस इलाके में हो रहा हो वहां के लोगों पर एक ग़ैर मामूली प्रभाव डालता है आज से ख़ुद्दामुल अहमदिया की इज्तिमा भी शुरू हो रहा है इस हवाले से भी सभी शामिल होने वाले ख़ुद्दामों को भी याद दिला देता हूं कि अपने व्यवहारों को इस प्रकार का रखें के लोगों पर नेक प्रभाव छोड़ने वाले हों। अल्लाह तआला इन के इज्तिमा को भी बरकतों वाला बनाए और मौसम की ख़राबी की कारण से जो कुछ उन को परेशानियां और घबराहट है अल्लाह तआला इस को दूर करे और मौसम को अच्छा करे।

अब मैं दोनों जलसों में काम करने वालों का भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूं जर्मनी में भी और बेल्जियम में भी उन्होंने अपनी ताकतों और सामर्थ्य के अनुसार जलसा में शामिल होने वाले मेहमानों की सेवा की। इसी प्रकार वहां शामिल होने वाले जो सारे अहमदी लोग थे उन का भी मैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। विभिन्न वर्गों और मिज़ाजों के लोग हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमानों के सेवा के लिए ख़ुद को पेश करते हैं। बेल्जियम में तो काम करने वालों की कमी भी थी, लेकिन फिर भी, जैसा कि मैंने कहा, बड़े उत्तम रंग में, उन्होंने इस संबंध में अपना काम किया। इसी प्रकार, श्रमिकों को भी आभारी होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें अगली बार सेवा करने और ख़ुद को तैयार करने का मौका दिया है, और भविष्य के लिए जो कमज़ोरियां और कमियां रह गई हैं उस के बारे में ख़ुद सोचें और देखें कि आने वाले सालों में उन्हें किस तरह बेहतर बना सकते हैं। विशेष रूप से प्रशासन को, अधिकारियों को अपनी समीक्षा करनी चाहिए। अपनी योजनाओं की समीक्षा करनी चाहिए और सभी कमजोरियों को लाल किताब में लिखना चाहिए, ताकि उन्हें फिर से दोहराया न जाए।

जर्मनी में काम करने वाले श्रमिकों के बारे में शिकायत आया करती हैं कि उनके चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं है और अच्छी तरह से व्यवहार नहीं करते हैं। ड्यूटी देते समय कठोर रवैया होता है। इस बार आमतौर पर इसके बारे में अच्छी रिपोर्ट है। आगामी वर्षों में इसे और बेहतर बनाने की कोशिश करें। मैं एक ग़लती की ओरर ध्यान दिलाता हूं और यह मर्दों के जलसा में एक सत्र में घर के बारे में पढ़ी जाने वाली नज़्म है। इस को पढ़ने का अंदाज़ गलत था। हमारा स्टेज नाटकों का स्टेज नहीं है जहां उस शैली में नज़्में पढ़ी जाएं। अपनी रिवायतों को हमेशा सामने रखना चाहिए और इस प्रकार के अंदाज़ नहीं अपनाने चाहिए जो हमारी रिवायतों से अलग हों। दूसरे जलसा का कार्यक्रम बनाने वालों को हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि जलसा के सत्रों के दौरान जो कविताएं पढ़ी जाती हैं वे केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफ़ाओं की कविताएं हों। बाकी कविताएंन पढ़ी जाएं। अत: इस ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। मैंने अफसर जलसा को वहां भी ध्यान दिला दिया था।

इस के बाद अब मैं कुछ मेहमानों की प्रतिक्रियाएं प्रस्तुत करता हूं जिन से पता चलता है कि जलसा की बरकतों का केवल अहमदियों पर प्रभाव नहीं होता बल्कि ग़ैरों पर भी प्रभाव होता है।

बोस्निया से एक ग़ैर-अहमदी मस्जिद के इमाम आए हुए थे। जलसा में शामिल हुए थे। जलसा से पहले एक तब्लीग़ी सत्र में, उन्होंने कहा, मैं खुद जमाअत के बारे में जांच करना चाहता हूं, ताकि मैं अपने व्यक्तिगत ज्ञान के कारण जमाअत के बारे में सही राय स्थापित कर सकूं। यह एक बहुत ही खुले दिल के इमाम हैं। इस कारण से जलसा में शामिल होने के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया था। फिर जलसा पर कुछ समय बिताने के बाद, वह कहते हैं कि अहमदियों के बीच कुछ समय बिताने के बाद, मैं इस निष्कर्ष पर आया हूं कि तुम ही वे लोग हो जो इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं का प्रचार कर रहे हैं। जलसा की सभी कार्यवाही को सावधानी से और ध्यान से देखते रहे। जलसा के बाद, उन्हें प्रतिनिधिमंडल के बाकी लोगों के साथ जामिया अहमदिया जर्मनी भी दिखाया गया था। उन्होंने जामिया अहमदिया जर्मनी देखने के बाद कहा कि अफसोस है कि मुस्लिम धर्म और दुनिया की शिक्षा में बहुत पीछे हैं। लेकिन एक ओर जहां जलसा के दौरान मैंने देखा कि इमाम जमाअत अहमदिया ने सांसारिक ज्ञान के क्षेत्र में बहुत काम करने वाले छात्रों और छात्राओं को सन्दात दी हैं और जमाअत के लोगों में सांसारिक ज्ञान में आगे बढ़ने की भावना को बढ़ावा दे रहे थे। दूसरी ओर जामिया की सैर के बाद इस बात का भी एहसास हो गया कि जमाअत अहमदिया ख़िलाफत की इक्तेदा में कैसे धर्म के ज्ञान के प्रकाशन के लिए व्यवस्थित तौर से कोशिश कर रही है और कितने शानदार संतुलन के साथ इस क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और मुसलमानों की खोई हुई विश्वसनीयता लाने की कोशिश कर रही है। और इस के बाद वह मुझे भी मिले थे। उन्होंने बताया कि मैं बराहीन अहमदिया और तज़करह: पढ़ना चाहता हूं। मैंने कहा कि तज़करह पढ़ने के बजाय आप 'इस्लामी असूलों का सिद्धांत' और दावतुल अमीर Invitation to Ahmadiyyat पढ़ें। इससे आप को अधिक लाभ प्राप्त होगा। जमाअत के बारे में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे के बारे में भी इल्म तथा इर्फान के बारे में भी और अल्लाह तआला से आप के समर्थन के बारे में भी ज्ञान प्राप्त होगा।

फिर बोस्निया का प्रतिनिधिमंडल में एक बूढ़ी औरत थीं। कहती हैं कि मैं पहली बार जलसा सालाना में शामिल हुई हूं और समय के ख़लीफा से मुलाकात की जलसा के दिन बहुत तेज़ी से गुज़र गए। हमें पता ही नहीं चला। काश यह दिन और लंबे होते। मेरी इच्छा है कि में हर जलसा में शामिल होऊं।

एक कमज़ोर आंखों वाले मॉन्टेनेग्रो का से सम्बन्ध रखने वाले आदमी थे। कहते हैं कि मैं एक कमज़ोर नज़र रखने वाला आदमी हूं, परन्तु इस जलसा में शामिल हो कर मैंने सब कुछ दिल की आंखों से देखा है और मैं इस जलसा से रूह को सैराब कर के जा रहा हूं। जिस देश या क्षेत्र से सम्बन्ध रखता हूं वहां लोग धर्म से बहुत दूर हूं। और आध्यात्मिकता क्या है? इस की हमें कोई ख़बर नहीं है। लेकिन जलसा के दौरान मुझे एहसास हुआ कि ख़ुदा मौजूद है और उस की बरकतें यहां शांति और सुरक्षा और अमन मन की शान्ति के रूप में प्रकट हो रही हैं जिस से मैंने भी हिस्सा लिया है।

इस साल जलसा सालाना जर्मनी में बुल्गारिया के 56 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। इसमें 31 ग़ैर जमाअत मेहमान थे। उन की मुझ से मुलाकात भी हुई। प्रतिनिधिमंडल में शामिल एक महिला किरिलका साहिबा ने अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहा कि मैं कई कार्यक्रमों में शामिल हुई हूं, लेकिन जमाअत अहमदिया के जलसा सालाना में रूहानी वातावरण था। जो अब सारी ज़िन्दगी अमन का सामान है लोगों के दिलों में हमारे लिए सम्मान और प्यार था। उनकी आंखों से उनके ईमान का अंदाज़ा होता था के कैसे नेक हैं। समय के ख़लीफा की तकरीरों ने मेरे दिल को गहराई से प्रभावित किया है। मैंने भाषण के दौरान रोना जारी रखा और मुझे लगा कि अब मेरा नया जीवन शुरू हो रहा है। मैं कोशिश करूंगी कि इन चीज़ों के प्रकाश में रहने की कोशिश करूं। मैं आपका धन्यवाद अदा करती हूं कि इस रूहानी माहौल से मुझे लाभ उठाने का अवसर दिया।

तो ये लोग जो अहमदियत को जानते भी नहीं इन्होंने ने भी इस माहौल से प्रभाव लिया है। इन के लिए भी जलसा बरकतों वाला हो जाता है।

एक ईसाई महिला क्रेसी मीरा कहती हैं, मैं अपने पति और बच्चों के साथ जलसा में शामिल हुई हूं। मैंने कभी ऐसी नियमित आतिथ्य नहीं देखा है। माता-पिता का सम्मान, बच्चों के प्रशिक्षण के बारे में बहुत कुछ सीखा है, इसे अब जीवन का हिस्सा बनाऊंगी। पुरुष जिस तरह महिलाओं का सम्मान कर रहे थे उस से मैं आश्चर्यचकित थी। ईसाई धर्म में महिलाओं के लिए इतना सम्मान और उज़्ज़त नहीं देखी है और धन्यवाद के साथ आपके लिए दुआ करती हूं।

तो यह पुरुषों के लिए भी एक सबक है कि न केवल जलसा के दिनों में नहीं,हमेशा महिलाओं का यह सम्मान उन लोगों के दिलों में रहना चाहिए इस शिक्षा के अनुसार जो अल्लाह तआला ने हमें दी है।

एक दोस्त मुसलमान थे मुहम्मद यूसुफ साहिब। जलसा में शामिल हुए। कहते हैं मैं पहली बार जलसा में शामिल हो रहा हूं। जो बातें जमाअत के ख़िलाफ सुनी थीं अब जलसा के परिवेश को देखकर मेरा दिल साफ हो गया है सब तरफ भलाई और कुरआन और हदीस के अनुसार शिक्षा थी और मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी के लिए नहीं ने मुझे बहुत प्रभावित किया। सब तरफ शान्ति ही शान्ति थी। विशेष रूप से समय के ख़लीफा की तकरीरों के समय बहुत शान्ति थी। जलसा के समय में ही मैंने फैसला कर लिया था कि अब मैं भी अहमदियत में शामिल होता हूं। मेरी काफी व्यक्तगित कठिनाइयां हैं परन्तु जब मैं जलसा में शामिल हुआ हूं तो मेरी परेशानियां अपने आप ही दूर होना शुरू हो गईं। अब मैं जमाअत के पैग़ाम को आगे फैलाऊंगा।

फिर लातविया से आने वाले वफद की प्रतिक्रियाएं हैं लातवयिा से एक मेडिकल के छात्र आए था। वह कहते हैं कि जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होना मेरे लिए बहुत सम्मान का विषय है। मुझे लगा कि यह जलसा उन सभी लोगों का जलसा है जो दृढ़ विश्वास और धैर्य वाली रूहूं के मालिक और विश्वास योग्य शान्ति वाले लोग हैं। यह मेरे लिए आश्चर्यचकित था कि कैसे हर कोई समर्पण से तकरीरें सुनने के लिए तैयार था और अपने काम में मग्न था, और इस तरह बहुत सम्मान था कि समय के ख़लीफा से भी मेरी मुलाकात हो गई। उन्होंने जर्मनी में शरणार्थियों के बारे में और इस्लाम के बारे में लोगों के दिलों में पाए जाने वाले भय के बारे में बात की और इस बात पर मुझे खुशी हुई कि जमाअत अहमदिया दुनिया में शांति और भाईचारे का संदेश दे रही है और जर्मन समाज में दोस्ती मित्रता और सेवा पर जोर दे रही है।

लातविया में एक ग़ैर-अहमदी पाकिस्तानी मास्टर की शिक्षा का अध्ययन कर रहे हैं। यह जलसा में भी शामिल हो गया। कहते हैं कि मैं पिछले महीने स्टडी अध्ययन पर पाकिस्तान से लातविया आया हूं। मुझे जलसा में शामिल होने के लिए भी आमंत्रित किया गया था जिसे मैंने शंका के बाद स्वीकार कर लिया था। जब मैं जलसा गाह में पहुंचा, तो मैं वहां प्रशासन को देखकर आश्चर्यचकित हुआ क्योंकि वहां बहुत से लोग थे। प्रशासन बहुत सौंदर्य और समझ के साथ सभी को संभाला था। जलसा में बहुत से लोग थे, जो कई अलग-अलग देशों के ग़ैर-मुस्लिम मेहमान थे, और सभी को इसमें आमंत्रित किया गया ताकि वे इस्लाम को आकर ख़ुद देख सकें। मैंने इतना प्यार, मुहब्बत, सम्मान, इज़्ज़त और आतिथ्य कभी अपने पूरे जीवन में नहीं देखा जितनी मैंने वहाँ देखी और मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि सभी ग़ैर मुसलमानों पर बहुत अच्छा असर होगा। निश्चित रूप से इस्लाम धर्म की तरफ आने की कोशिश करेंगे। क्योंकि मैं अहमदी नहीं हूं, इस लिए मेरे दिल में कुछ ग़लत धारणाएं थीं जो कि अन्य सभी संप्रदायों के मुसलमानों के दिल में होती हैं। जब मैंने स्पीकर को सुना और वहां लिखे गए शब्दों को देखा और वहां नमाज़ भी पढ़ी तो मुझे कोई अन्तर नहीं लगा। यही सबकुछ हम भी कर रहे हैं जो यह करते हैं और सबकुछ भी करते हैं। वही उनका कल्मा है। वही नमाज़ भी है। वही कुर्आन भी है सबसे अधिक ध्यान देने योग्यह बात ख़त्में नबुव्वत थी जिस पर अब मैं सोचने पर मजबूर हो गया हूं कि क्या मैं अपने संप्रदाय को सच्चा कहूं या अहमदी संप्रदाय को। सबसे बड़ा फायदा जलसा में आने का यह हुआ कि मैंने अहमदी लोगों में बैठ कर और मेरी आंखों से सब कुछ देखा है और मेरे कानों से सुना है और अब मैं ख़ुद को अच्छी तरह देखूंगा कि इस्लाम में क्या है खत्मे नबुव्वत क्या है? मुझे समय के ख़लीफा की तकरीरें बहुत पसन्द आईं, खासकर आखरी दिन वाली। ये चार दिन मेरे जीवन के बहुत अच्छे दिन थे। कहते हैं कि बाकी मुसलमान केवल बातें करते हैं और नफरत फैलाते हैं, लेकिन यहां मैंने केवल प्यार, सम्मान और इज़्जत देखी। मेरे साथ कुछ ग़ैर-मुस्लिम दोस्त थे। वे मुसलमानों के इस व्यवहार से बहुत प्रभावित थे, इस इज़्ज़त तथा सम्मान से जो अहमदिया जमाअत ने उन को दिया। कोई भी जो प्रशासनिक टीम का था, उस ने बहुत प्यार ,मुहब्बत और सम्मान से बात की, और उन्हें निर्देशित करता था और इतने बड़े जलसा को इतनी खूबसूरती से प्रबंध किया था और मैं दिल का गहराई से धन्यवाद करता हूं।

फिर कृषि विश्वविद्यालय लातविया के एक श्रीलंकाई लेक्चरार जलसा में शामिल हुए थो। कहते हैं कि सच्ची बात यह है कि जब मैंने इसमें शामिल होने का फैसला किया, तो मुझे थोड़ा डर लगा था, इस समारोह पर कोई आतंकवादी हमला न हो जाए। लेकिन जब मैंने इस जमाअत की सुरक्षा देखी, तो मुझे एहसास हुआ कि कोई भी इस कार्यक्रम को या इस में शामिल किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुंचा सकता है।

हालांकि, यह तो अल्लाह तआला की कृपा है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला स्वयं हमारी सुरक्षा के प्रबंधन कर रहा है, हमारी सुरक्षा क्या होनी है।

बहरहाल कहते हैं कि इस पूरे कार्यक्रम की सुरक्षा की सराहना करता हूं। हालांकि मेरे कई श्रीलंकाई मुस्लिम मित्र हैं, फिर भी एक बौद्ध घर में पैदा होने के कारण वे बौद्ध अनुयायी हैं। इस्लाम धर्म के बारे में कोई विशेष ज्ञान नहीं था। जलसा ने मुझे असली इस्लाम के बारे में सिखाया है और अन्य इस्लामी समूहों के बारे में बताया है। इसी तरह, अहमदिया संप्रदाय और अन्य संप्रदायों के बीच का अंतर स्पष्ट हो गया है। इस आयोजन से मैंने जो सबसे अच्छी चीज़ सीखी है वह यह है कि अहमदिया जमाअत एक प्रेमपूर्ण जमाअत है। मैं इस की बहुत प्रशंसा करना चाहता हूं। मैं आपकी जमाअत की प्रबंधन क्षमता को देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सका, और यह एक स्पष्ट संकेत है कि आप लोगों को दुनिया की सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकते हैं।

लातविया, से एक छात्रा गुलिया साहिब पहली बार आईं और किसी भी इस्लामी कार्यक्रम में पहली बार भाग लिया था। कहता हैं मुझे सब कुछ अच्छा लगा खाना पीना हर चीज़। लोग बहुत अच्छे चरित्र वाले थे। ड्यूटी पर तेनात लजना की औरतें हमेशा मुस्कुरा कर मिलती थीं। लोगों को लज्ना से ज्यादा शिकायतें थीं। यह कहती हैं कि हमेशा मुस्कुराते हुए मिलती थीं और मुझे यह देख कर बहुत अच्छा लगा। वे सभी छोटे बड़े वातावरण को साफ रखने में लगे हुए थे। मुझे ये चीज़ें भी अच्छी लगीं। मैंने ख़ुद को सहज महसूस किया। जब मेरी नज़र स्क्रीन पर पड़ी तो मैंने देखा कि मर्दों के पण्डाल में सब लोगों ने एक दूसरे के कन्धे के ऊपर हाथ रखा हुआ है। वह बैअत का ज़िक्र कर रही हैं। इस सम्मेलन में शामिल होने के बाद, इस्लाम के बारे में मेरे विचार पूरी तरह से बदल गए हैं और यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अभी भी कुछ लोग हैं जो इस दुनिया की भलाई चाहते हैं।

लातविया के प्रतिनिधिमंडल में शामिल एक और लड़की अनास्तासिया साहिब है। जो ग़ैर-मुस्लिमों से वहां में अलग भाषण करती हूं इस के बारे में बताती हैं कि मुझे यह बड़ा अच्छा लगा। जो बातें उन्होंने कीं वे बहुत अच्छी हैं। और फिर कहती हैं कि यह ख़िताब सुनने के लिए क्योंकि औरतें तथा मर्द एक स्थान पर होते हैं कोई हज़ार के लगभग आदमी होते हैं। जर्मन विशेष रूप से चार पांच सौ के लगभग। कहती हैं कि इस ख़िताब के लिए मैं मर्दान जलसा में आई थी और बाकी समय में ने लज्ना की मार्की में गुज़ारा। पुरुषों के बीच में बैठे मुझे शर्म महसूस हो रही थी और मुझे अजीब लग रहा था कि मेरा सिर पर दुपट्टा नहीं है।

इसलिए यह बात उन लड़कियों में भी भरोसा पैदा करने वाली होनी चाहिए जो कहती हैं कि यहां आ कर हमें शर्म आती है या स्कार्फ या दुपट्टा को उतार देती हैं। यह ईसाई आकर इस बात पर शर्म अनुभव कर रही हैं कि मैं पुरुषों में क्यों बैठी और बिना दुपट्टा के बैठी।

कोसोवो के एक वकील ने अपने विचार व्यक्त किए कि जलसा की प्रणाली को देखते हुए, ऐसा लगता है कि हर कोई ख़िलाफत की आज्ञाकारिता में अपना काम कर रहा है। यह सब आज्ञाकारिता इस हस्ती का प्यार था, जो ख़िलाफत के रूप में है। और कहते हैं कि मुझे ख़लीफा से मिलने का अवसर मिला। जमाअत में हर कोई एक लड़ी में पिरोया हुआ है। कोसोवो में भी, इस प्रकार के इज्तिमा होते हैं, लेकिन इस जलसा में शामिल होने से, एक अलग ही अनुभव इन्सान पर छा जाते हैं कि इस जलसा में प्रत्येक रंग और जाति के लोग शामिल होते हैं और प्रत्येक की आवश्यकता के अनुसार उन का ध्यान रखा जाता है। यह वकील अहमदी नहीं हैं।

कोसोवो के प्रतिनिधिमंडल में, एक फिज़ीक्स की प्रोफेसर आर्बर (आर्बर) साहिब हैं उन का कहना है कि यह मेरे लिए अविश्वसनीय था कि इतने लोगों का एक स्थान पर इकट्ठा होना और उनकी जरूरतों को पूरा करना संभव है। जलसा में शामिल होने के बाद, सभी व्यवस्थाओं को ध्यान पूर्वक देखा कि किस प्रकार हर एक चीज़ एक निज़ाम से चल रही है और ज़रूरतों का ध्यान रखा जा रहा था। प्रत्येक काम के लिए एक सेवा करने वाला नियुक्त किया गया था। मुझे लंगर ख़ाना में जाने का संयोग हुआ। वहां एक व्यक्ति से मुलाकात हुई। वह पिछले बीस वर्षों से प्याज छीलने के लिए काम कर रहा है और पिछले बीस वर्षों से उसके पास केवल एक चाकू है। उसने मुझे बताया कि इस चाकू को मैंने पिछले बाईस साल तक रखा इस लिए रखा कि ख़लीफतुल मसीह राबे ने इसे प्रयोग किया था

और उस पर हाथ लगाया था। तो इस संबंध में, इसका उन पर बहुत प्रभाव हुआ।

जॉर्जिया से अठत्तीस लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल ने जर्मनी के जलसा में शामिल हुआ। दो पादरी साहिब थे। दो मुफ्ती साहिब थे शिया और सुन्नी लीडर थे और अन्य तीस ग़ैर अहमदी थे। इस प्रतिनिधिमंडल में एक ग़ैर-अहमदी इमाम जंबुल (जंबुल) साहिब उल्लेख करते हैं कि मैं जॉर्जिया की मस्जिद का इमाम हूं और मैं अहमदिया जमाअत के निमंत्रण पर जर्मनी आया हूं। मैंने इस्लाम के बारे में कई नई बातें सीखी हैं जिन्हें मैं पहले नहीं जानता था। और फिर मेरे बारे में कहते हैं कि उनका एक वाक्य मुझे याद रहेगा कि हमारा कर्तव्य मानवता की मदद करें। इस्लाम का धर्म केवल शांति का धर्म है। यहां आने से हमें इस्लाम की सच्ची शिक्षा मिली।

और एक और महिला लाको साहिबा हैं। वह कहती हैं कि जलसा की व्यवस्था के कारण मैं हर कर्मचारी को धन्यवाद देना चाहती हूं। फिर एक और हैं अरमा साहिबा कहती है कि आज मैं महिलाओं के कार्यक्रम में शामिल हुई हूं और मुझे आश्चर्य है कि महिलाएं सभी कार्यक्रमों का प्रबंधन कैसे करेंगी। यह आश्चर्य की बात थी कि सुरक्षा की जांच भी महिलाएं कर रही थीं और मुझे ये सब कुछ बहुत अच्छा लगा। मैं आभारी हूँ और फिर यह कहती हैं, मैंने महिलाओं के कार्यक्रम को देखा और यह बहुत आश्चर्य की बात है कि महिलाओं की शिक्षा और प्रशिक्षण का कितना विचार किया जाता है, और सबसे बड़ी बात यह है कि समय के ख़लीफा अपने हाथों से छात्रों को उनके शैक्षणिक पुरस्कार दे रहे थे।

फिर जॉर्जिया से एक और साहिब बयान करते हैं यह भी मुस्लिम हैं कि मैं एक मुस्लिम संगठन का अध्यक्ष हूं। इस कार्यक्रम में शामिल होना हमारे लिए एक बड़ा सम्मान था। मैंने यहां आध्यात्मिकता और भाईचारे को देखा है। मैं समझता हूं कि यह एक शानदार अवसर था कि हम यहां आए और इस से लाभ प्राप्त किया।

एक और दोस्त थे मोहम्मद अकबर साहिब। वह कहते हैं कि बचपन यह सुन रहा है कि कुछ महदी आएगा जो दुनिया को बदल देगा और हम इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब पहली बार मैं सुन रहा हूं कि महदी, जिस का हम इंतज़ार कर रहे थे, वह गुज़र भी गया और अब उनके ख़लीफाओं का सिलसिला जारी है। अब मैं जमाअत के लिट्रेचर का अध्ययन करूंगा और मुझे आशा है कि मुझे संतुष्टि मिलेगी।

फिर बिशप हैं, वह यहां भी आए थे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह जलसा देख कर बहुत प्रभावित हुआ हं। वही नीले लिबास में तो बिश्प साहिब थे।

हंगरी से एक प्रोटेस्टेंट चर्च के पादरी जलसा में आए। यह धार्मिक कामों के अलावा, कल्याणकारी काम में भी बड़ा काम करने वाले हैं । वह कहते हैं कि मैं एक ईसाई हूं, लेकिन आपके जलसा में जा कर मुझे ईमानी ताज़गी मिलती है, और मैं ताज़ा हो कर लौटता हूं। यह चार्जिंग पूरा साल मेरी सहायक होती है। पहले भी आ चुके हैं कहते हैं चार्ज होकर जाता हूं, और फिर यह पूरा साल मेरे कामों में मददगार रहती है। मुरब्बी साहिब कहते हैं कि महोदय के कारण न केवल उन के गांव में बल्कि उन के सभी परिचित लोगों से परिचय हुआ है और जमाअत के माध्यम से तब्लीग़ के नए माध्यम वहां खुल रहे हैं।

हंगरी से एक साहिब वर्गा साहिब शरणार्थी शिविर के दफतर में कार्य करते हैं। कहते हैं कि जलसा ऐसा अवसर है जैसे कि कोई व्यक्ति एक महान चीज़ को देखे तो आश्चर्य के साथ अंदर से कपकपी छा जाए। बिल्कुल इसी प्रकार आप लोग जब नारे लगाते थे तो इस प्रकार लगता था कि अभी इमाम आदेश देगा और आप लब्बैक कहते हुए कुछ कर गुज़रेंगे। आरम्भ में मुझे बहुत भय हो रहा था। हंगरी में इस प्रकार की भीड़ तो बहुत दूर की बात है सौ लोग भी हों तो कोई लड़ाई हो जाती है परन्तु हज़ारों लोगों का इस प्रकार का शान्ति देने वाली भीड़ मैं ने अपने जीवन में पहली बार देखी है।

हंगरी के एक शरणार्थी शिविर के वित्तीय मामलों की देखरेख करने वाली इलोना साहिबा हैं। उन्होंने कहा कि जलसा आदि की व्यवस्था देखने के बाद उन्होंने पूछा कि जलसा पर इतना पैसा खर्च कहां से किया जाता है? उन्हें जमाअत की सेवा और चन्दों की प्रणालियों के बारे में बताया गया । इस पर वह बहुत आश्चर्यचकित हुईं। फिर यह कहती हैं कि जलसा एक ऐसा आयोजन है जो मनुष्य को अन्दर से साफ करता है। जैसा बच्चे को आरम्भ में नहाने से भय लगता है परन्तु वह उस के लिए ज़रूरी होता है इसी प्रकार की हालत इन्सान की जलसा देख कर होती है। तो यह मैंने कहा कि जलसा का ग़ैरों पर भी बहुत प्रभाव होता है।

हंगरी के प्रतिनिधिमंडल में एक चिकित्सक डॉक्टर वफा साहिबा हैं। जलसा में शामिल हुई तो यह बहुत जोश में थीं। दूसरे दिन, लजना से जो सम्बोधन था उन्होंने लजना की मार्की में सुना। उसके बाद, मेहमानों से मेरा जो सम्बोधन था वह मर्दाना हाल में आकर सुना तो कहने लगीं कि लजना की मार्की में आकर ही ख़ुशी थी मुझे वापस लजना में जाने का प्रबन्ध कर दें। जामिया की यात्रा के दौरान, बहुत रुचि के साथ एक पुस्तकालय देखा, मूल इस्लामी किताबें देखें। बाहर आ कर कहने लगीं कि हर आयत यथा अवसर और यथा स्थान है, और साथ ही जामिया की इमारत पर लिखी गई आयत की तरफ इशारा कर के कहा कि और यह देखें कैसे सही स्थान पर लिखा हुआ है कि वह आयत यह है .....

फिर मैसेडोनिया का एक प्रतिनिधिमंडल है। जर्मना की जलसा में मैसेडोनिया से 83 लोगों ने भाग लिया और पचास लोग एक बस के माध्यम से दो हज़ार किलोमीटर की यात्रा कर के पधारे थे जबकि अन्य अन्य माध्यमों का प्रयोग करके आए थे। उन शामिल होने वालों में से 21 अहमदी थे। 2 9 ग़ैर अहमदी मुसलमान थे। 14 ईसाई थे। उन मेहमानों में एक बड़े शहर के मेयर भी थे। 4 टीवी चैनल के छह पत्रकार भी शामिल हुए। जलसा के तीन दिनों जलसा के दृश्यों को रिकार्ड किया। विभिन्न मेहमानों के साक्षात्कार लिए और उन्होंने कहा कि अपने टेलीविजन के लिए एक डाक्यूमन्ट्री तैय्यार करेंगे। जलसा में तीन मुस्लिम प्रोफेसर भी शामिल हुए। जो आपस में दोस्त हैं उनमें से एक प्रोफेसर जो आईटी के प्रोफेसर हैं जिनका नाम जलाल दीनी (Djeladini) साहिब है कहते हैं मैं जलसा के प्रशासन और मैसेडोनिया में अहमदी लोगों का आभारी हूँ जिन के निमंत्रण पर मैं जलसा में शामिल हुआ। इस जगह मैंने सही इस्लामी शिक्षाएं देखी हैं। हालांकि इससे पहले कि मैंने जमाअत अहमदिया और उन के ख़लीफाओं के बारे में पढ़ा और सुना था और जमाअत के ख़िलाफ बहुत सी बातें सुन रखी थीं लेकिन यहां आ कर इन सब का जवाब मिल गया। मैंने जमाअत के ख़लीफा को देखा। उन की बातें सुनीं उनसे बहुत ज्ञान मिला। जो बातें जमाअत के ख़लीफा से वर्णन कीं उन से बहुत अधिक प्रभावित हूं। फिर, कहते हैं कि ख़लीफा की बातें सुन कर मेरा ईमान है कि सारी दुनिया के लोग इस सन्देश और रास्ते को धारण कर लेंगे जो अल्लाह तआला की तरफ से शुरू हुआ है। मेरी तरफ से आप को सलाम और शांति मिले।

लिथुआनिया से पचास लोगों पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल शामिल हुआ। उन में चालीस ग़ैर अहमदी दोस्त थे और दस अहमदी दोस्त थे। एक साहिबा कहती हैं कि जलसा के दौरान ऐसा लगा कि मैं जमाअत का ही हिस्सा हूं। यह जलसा हमें बराबरी मुहब्बत और दूसरों के साथ सेवा करने की शिक्षा देता है जिसका व्यावहारिक प्रदर्शन इस जलसा में देखा जा सकता है।

लिथुआनिया से सम्बन्ध रखने वाले एक जीरोनी मास साहिब हैं वह कहते हैं, "मैं एक लेखक हूं और इस्लाम के बारे में जानने के लिए यहां आया हूं।" ख़ुदा तआला की वहदानियता का दर्स जिस अंदाज़ में ख़लीफा ने दियाहै इस ने मुझ पर बहुत अधिक प्रभाव किया है। फिर कहते हैं कि उन्होंने कहा, "सिर्फ इबादत ही न की जाए बल्कि ख़ुदा को ख़ुश करना उद्देश्य हो। इस बात ने मेरा दिजल जीत लिया है । मैं वापस जाकर जमाअत के बारे में समाचार पत्रों में कॉलम लिखूंगा और अपनी पत्रिका का एक अंक पूरा इस जमाअत के बारे में प्रकाशित करूंगा। मुझे इस बात की आशंका है कि ऐसा करने से मुझे विरोध का सामना करना पड़ेगा, लेकिन मैं हक का साथ देना चाहता हूं। मेरा दिल यहां आने से बहुत खुश और संतुष्ट है और मैं आप सब के लिए और जमाअत के लिए बुहत शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं।

ताजिकिस्तान के एक ग़ैर-जमाअत नेता रहीम साहिब थे। यह एक राजनेता भी हैं। यह कहते हैं कि मुझे पहली बार जलसा में शामिल होने का अवसर मिला, और जमाअत अहमदिया को देखने का मौका मिला। सभी श्रमिकों का जोश मेरे लिए एक उदाहरण है कि यह दिन और रात कैसे काम कर रहे हैं। जमाअत अहमदिया के ख़लीफा से मुलाकात में, मुझे अपने दिमाग में उभरे कई प्रश्नों के उत्तर मिल गए हैं और उन के पास बैठ कर लगता है आज एकता इस जमाअत के पास है। मुसलमानों के आज के दौर में स्थिति के बारे में मेरे सवाल का बहुत व्यापक जवाब दिया और मैं आश्वस्त हो गया मैं समझता हूँ कि जमाअत अहमदिया भविष्य में सभी मुसलमानों को जमा कर सकती है। मुझे यह जमाअत बहुत गंभीर लगती है। मैं इस जलसा और ख़लीफा के साथ एक ख़ुश करने वाली मुलाकात को हमेशा याद ऱखूंगा।

ताजिकिस्तान की यूनीवर्सिटी की एक लेक्चरार हैं वह कहती हैं, मैं जमाअत

अहमदिया का जलसा और प्रबंधन को देखकर बहुत खुश हुई। मैंने जीवन में पहली बार आतिथ्य और सहयोग का उदाहरण देखा है। जमाअत अहमदिया को यहां बहुत सारी स्वतंत्रता है और समय के ख़लीफा का लजना से संबोधन आज की समस्याओं का वास्तविक समाधान है। काश सारी दुनिया इस का पालन करे। मुझे इमाम से मिलने का मौका भी मिला। पत्रकारिता और समकालीन मुद्दों पर उनके पास पर्याप्त जानकारी है। मुलाकात से पहले, मेरा मानना था कि आप केवल एक धार्मिक व्यक्ति हैं, लेकिन जब मैंने बातें कीं तो पर्याप्त जानकारी मिलीं और उन्होंने यह ठीक कहा है कि मीडिया दुनिया में भ्रष्टाचार फैलाने में शामिल है। अगर मीडिया चाहे तो वह शांति में एक भूमिका निभा सकता है। मेरी शुभकामनाएं जमाअत अहमदिया और इमाम जमाअत अहमदिया के साथ हैं।

सेनेगल के एक बड़े शहर अमबोर के मेयर भी आए हुए थे जो कि सेनेगल के बड़े सांप्रदाय मुरीद के ख़लीफा के प्रतिनिधि के तौर पर जलसा में शामिल हुए थे वहां उन्होंने स्टेज पर मझे एक उपहार भी दिया था। यह कहते हैं कि मैंने अपने ख़लीफा की बैअत की हुई है, लेकिन यहां पर मैंने बैअत का जो नज़ारा देखा वह अपने जीवन में कभी भी नहीं देखा है। जब वह इस बारे में बात कर रहे थे, वह बहुत भावुक हो गए। आँसू उनकी आँखों से आने आरम्भ हो गए। रहने लगे कि हमारा भी एक ख़लीफा है लेकिन मैंने कभी ख़िलफत से ऐसा प्यार नहीं देखा है।[] आज मुझे अंदाज़ा हो गया कि किस प्रकार सहाबा जान फिदा करते थे जो मैंने लोगों के दिलों का हाल देखा है जो मुहब्बत देखी है मुझे इस तरह लगा कि अगर एक ही इशारा ख़लीफा करें तो कोई इस प्रकार का बन्दा नहीं होगा जो काम से पीछे हटे। इतनी मुहब्बत और आज्ञापालन मैंने देखा। फिर कहते हैं हमारा भी तीन दिन का जलसा होता है जब हमारा ख़लीफा आता है तो कोई बन्दा ख़ामोशी से नहीं बैठा होता, लेकिन जब यहां ख़लीफा यहां आते हैं, तो सभी चुप हो जाते हैं और केवल ख़लीफा की बातें सुनने के लिए तैयार होते हैं। यह मैंने किसी भी दुनिया के या किसी अन्य धार्मिक नेता के मानने वालों में नहीं सुना है।

जलसा के तीसरे दिन जो बैअत हुई इस अवसर पर, जो नई बैअत करने वाले 42 लोग थे। उन्होंने बैअत ली और उन का सम्बन्ध 17 विभिन्न क़ौमों से था।

अल्बानिया से आने वाले एक दोस्त जो बर्क साहिब हैं कहते हैं कि मैं अहमदियत का बहुत विरोधी था। मेरा भाई और मेरे दोस्त अहमदियत में शामिल हो चुके थे। मैं हर संभव कोशिश करता था कि मेरे भाई को अहमदियत से नफरत हो जाए अन्त में हमारे मध्य में यह तय पाया कि हम दोनों दुआ करते हैं जो सच्चा होगा वह जीत जाएगी। तो कहते हैं कि निरन्तर दुआ के बाद मेरा दिल चाहने लगा कि मैं जलसा सालाना और ख़लीफा को देखूं ताकि जो भी फैसला करूं वह अधूरे ज्ञान के कारण न हो परन्तु फिर भी कुछ बैचेनी थी। अत: फैसला का समय आ गया और मुझे समय के ख़लीफा की चेहरा नज़र आया और जब मेरी नज़र पड़ी तो उसी समय मेरी सारी दुश्मनी द्वेष नफरत और सारी शंकाएं निकल गईं। अब मेरे पास इंकार की कोई गुंजाइश नहीं थी अत: जलसा से वापस आकर मैंने बैअत फार्म भर दिया। अब इस बार मैं आयाहूं और मैंने बैअत करने की तौफ़ीक़ पाई है और फिर यह ब्यान करते हैं कि इस दौरान मुझे एक ओर मुश्किल पेश आई कि मेरी मंगेतर अहमदी नहीं थी। अत: कोशिश कर के इसे अपने साथ यहां ले कर आया हूं। मेरी मंगेतर ने जब समय के ख़लीफा का लजना से ख़िताब सुना तो उसी समय उस ने अहमदी होने का फैसला कर लिया मेरी मंगेतर ने कहा कि जिस जमाअत के पास इतना दयालु और मुहब्बत करने वाला ख़लीफा हो उसे एक वजूद से सारी बरकतें मिल गई हैं जो बाकी मुसलमानों के पास नहीं हैं। अब हम जल्दी ही अहमदी होने की अवस्था में शादी करेंगे।

जलसा सालाना जर्मनी का मीडिया कवरेज यह है। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में रॉयटर्स वर्ल्ड, यूरोपीय समाचार एजेंसी, मैसीडोनिया टीवी, लिथुआनिया, इज़राइल और कुछ ऑनलाइन समाचार पत्रों के पत्रकार शामिल थे। नेशननल स्तर पर जर्मनी के चार टीवी स्टेशन और दो प्रिंट मीडिया और राष्ट्रीय स्तर पर एक रेडियो का प्रतिनिधि मौजूद थे। इसके अलावा, राष्ट्रीय समाचार एजेंसी के प्रतिनिधि भी शामिल थे। स्थानीय स्तर में दो टीवी चैनल, दो रेडियो स्टेशन, दो प्रिंट मीडिया और समाचार पत्र के प्रतिनिधि शामिल थे। कुल मिलाकर जर्मनी में तीन दिवसीय जलसा की कवरेज हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक, चार टीवी चैनलों, दो रेडियो चैनलों और पच्चीस अख़बारों और अन्य मीडिया के माध्यम से 6 करोड़ 28 लाख 57 हज़ार लोगों तक सन्देश पहुंचा है। इसके अलावा अधिक लेख आ रहे हैं।

मीडिया कवरेज जलसा सालाना बेल्जियम। यहां कुछ अभिव्यक्तियां भी थीं जिन्हें सही तरीके से अभी जमा नहीं किया जा सका। बाद में माजिद साहिब की रिपोर्ट में आ जाएंगी। बहरहाल जो मीडिया कवरेज है बेल्जियम टीवी चैनल और तीन समाचार पत्रों में ख़बरें प्रकाशित हुई हैं, जिसके माध्यम से संदेश दो मिलियन लोगों तक पहुंच गया। बिलजियम टीवी और जलसा में समाचार पत्रों के बारे में ख़बरें प्रकाशित हुईं तो दिलबेक जहां जलसा हो रहा था। यह एक छोटा तो नहीं बल्कि एक कस्बा है जिसकी आबादी 46,000 है। बल्कि अब तो शहर बन रहा है। इस में पिछले 10,12 वर्षों में यह काफी विस्तार हुआ है। कुछ लोगों ने फोन करके आश्चर्य किया कि दिलबेक में चार हज़ार मुस्लिम इकट्ठे हुए थे और हम पता ही नहीं चला। उन के निकट यदि चार हज़ार मुस्लिम कहीं जमा हो जाएं तो वहां फित्ना और हंगामा ज़रूर होना चाहिए था। लेकिन कहते हैं कि चार हजार मुस्लिम इकट्ठे हुए थे और हम पता नहीं चला। हमें इस जलसा के साथ कोई परेशानी नहीं हुई और न ही हमने किसी प्रकार का शोर सुना।

फिर एम.टी.ए अफ्रीका द्वारा अफ्रीका के विभिन्न देशों के टीवी चैनल ने प्रोग्राम दिए हैं। रियू आफ रिलीजनस ने आन लाइन एक कार्यक्रम ऑनलाइन लॉन्च किया है, जिसके माध्यम से लगभग करीब 2 मिलियन (1.98 मिलियन) जलसा की कारवाई पहुंची है। लोगों के तो बहुत अधिक विचार हैं। मीडिया और अख़बारों की ख़बरें तो बहुत हैं जिन से इस्लाम की वास्तविक तस्वीर दुनिया के सामने प्रस्तुत की जाती है और दुनिया को पता चल रहा है। अल्लाह तआला उन जलसों के स्थायी और अच्छे प्रभाव स्थापित फरमाता चला जाए।

नमाज़ के बाद मैं कुछ नमाज़े ग़ायब पढ़ाऊंगा।

पहला नमाज़ जनाज़ा सैयद हसनात अहमद साहिब (कनाडा) का है। 27 अगस्त की उम्र में 92 साल की आयु में मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रेजाऊन। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत डॉक्टर सैयद शफी अहमद साहिब मुहक्किक देहलवी और सय्यदा कुरैशा ताहिर साहिबा उर्फ बेगम शफी के पुत्र थे। सिलसिला का दर्द रखने वाले, नेक और ईमानदारी आदमी थे। मरहूम मूसी थे। आप उन आरम्भिक लोगों में से थे जो सत्तर के दशक में कनाडा आए। जिन्होंने केनेडा में मीडिया में संघीय, प्रांतीय और स्थानीय स्तर पर जमाअत की परिचय कराया। पाकिस्तान में, अहमदियों पर विरोध के ख़िलाफ ज़ोरदार आवाज़ उठाई, और सभी अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए, आप अंतिम सांस तक काम करते रहे। आप मानवाधिकार रिलेशन सेंटर के संस्थापक थे। न्यू कनाडा अख़बार के प्रकाशक और मुख्य संपादक थे। कई पुस्तकों के लेखक थे। 1982 ई में आप ने कनाडा टीवी रोजर्स चैनल पर बिना मज़दूरी जमाअत के कार्यक्रम पेश करने का सिलसिला शुरू किया और दुनिया भर में पहली बार 12 दिसंबर 1982 को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफ़ा की तस्वीरों को और इस्लाम और अहमदियत के कार्यक्रम कनाडाई टेलीविजन पर पेश किए। अहमदिया गज़ट कनाडा के 1985-1986 में संपादक थे। मानवाधिकार की सेवा

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

करने वाले के रूप में, कनाडा सरकार ने उनके नाम की एक डाक टिकट जारी की। कनाडा सरकार और विभिन्न संगठनों ने उन्हें पुरस्कार और सम्मान दिया। तीन बार कनाडा की राष्ट्रीय जमाअत के तीन बार नेशनल सेक्रेटरी अमूरे ख़ारिजा के रूप में कार्य किया। 1988 ई में आप ने कनाडा में शरण लेने वाले अहमदियों के अधिकारों की रक्षा के लिए एक पाक्षिक समाचार पत्र न्यू कनाडा प्रकाशित करना शुरू किया जिसके संपादकीय के द्वारा कनाडा सरकार से नए आने वालों के अधिकारों मनवाने की तौफीक पाते रहे। इस अख़बार में, अहमदियत की मान्यताओं और अहमदियों के अधिकारों की रक्षा के लिए एक निडर पत्रकार का काम किया। इसी प्रकार, उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों की परिचय भी लिखी। और इस को जमा किया वह इन की एक बड़ी कोशिश है। अल्लाह तआला उन के स्तर ऊंचा करे और क्षमा का व्यवहार करे और रहम का व्यवहार फरमाए।

दूसरा नमाज़ जनाज़ा शौकत साहिबा का है, जो हाफिज़ कुदरतुल्लाह साहिब मुबल्लिग़ हालैण्ड और इन्डनेशिया की पत्नी थीं। 8 सितम्बर को 94 साल की आयु में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आदरणीया बाबू अब्दुल लतीफ साहिब की बेटी थीं। 1940 में हाफिज़ कुदरतुल्लाह साहिब के साथ उनकी शादी हुई जो वक्फे ज़िन्दगी और सिलसिला के आरंम्भिक मुबल्लिग़ों में थे। इन का यह साथ 53 साल तक जारी रहा। लगभग 20 साल का समय जबकि हाफिज़ साहिब तब्लीग़ के क्षेत्र में, प्रचार के क्षेत्र में मुबल्लिग़ होने के कारण देश से बाहर रहे, अपने बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण का काम अकेले अदा किया। पुराने मुबल्लिग़ों का पत्नियों ने भी बहुत त्याग किया हुआ है। पच्चीस साल तक, वे अपने पतियों से अलग रही हैं। बहुत नेक और ईमानदार दुआ करने वाली महिला थीं। बच्चों को कुरआन करीम पढ़ाने वाली, ज़रूरतमंदों की मदद करने वाली थीं। तहज्जुद को नियमित पढ़ने वाली थीं। धर्म के कामों में भरपूर सहयोग करने वाली थीं, ख़िलाफत से एक मज़बूत और उच्च संबंध था। कतलान भाषा में जो जमाअत की तरफ से कुरआन करीम प्रकाशित हुआ है उस का खर्च अपनी तरफ से हाफिज़ साहिब के फैमिली की तरफ से पेश करने की तौफीक़ मिली। इंडोनेशिया में एक मस्जिद के निर्माण का सारा खर्च परिवार वालों ने अदा करने के सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उनके पीछे रहने वालों में से एक पुत्र अज़ीजुल्लाह तीन बेटियां हैं। अल्लाह तआला उन सब को इन नेकियों को जारी रखने की तौफीक देता चला जाए इन से क्षमा के व्यवहार फरमाए। यह अताउल मुजीब राशिद साहिब की मुमानी थीं।

और तीसरा जनाज़ा चौधरी ख़ालिद सैफुल्लाह साहिब उप अमीर जमाअत ऑस्ट्रेलिया का है जो 16 सितम्बर को 87 साल की उम्र में वफात पा गए इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रेजाऊन। आप के परिवार में अहमदियत आप के दादा चौधरी मुहम्मद खान साहिब नंबरदार गांव गुलमुंज ज़िला गुरदासपुर के माध्यम से आई जिन्होंने 1890 ई में नौजवानी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के हाथ पर बैअत की थी। चौधरी फत्ह मुहम्मद साहिब को यह सम्मान भी प्राप्त था कि आप को अहमदियत का सन्देश ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने पहुंचाया था।। यह कादियाम गए वहां असर की नमाज़ का समय जा रहा था तो उन्होंने कहा कि चलो नमाज़ पढ़ लेते हैं। मस्जिद अक्सा में नमाज़ पढ़ने के लिए गए तो वहां नमाज़ समाप्त हो चुकी थी। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम बाहर आ रहे थे।. सलाम किया ये लोग नमाज़ पढ़ने लगे । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम वहीं बैठ गए और जब उन्होंने नमाज़ पढ़ ली तो उन को पूछा कि आप लोगों को मेरा सन्देश पहुंचा है। उन्होंने कहा कि नहीं। कोई विज्ञापन आदि नहीं पहुंचा। इन पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन को अपने कमरे में ले गए। कहते हैं वहां अलमारी में लिट्रेचर आदि पढ़ा हुआ था इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि तुम्हारे गांव में जितने पढ़े लिखे लोग हैं उन के लिए ले जाओ। तो यह कहते हैं कि पढ़े लिखे लोग तो तीन चार थे मैंने चौदह पन्द्रह की संख्या में वह लिट्रेचर उठा लिया जो आप के दावा का भी इलान था जो मैं ले गया। इस के बाद उस को पढ़ा इस से बहुत प्रभावित हुआ। और फिर सेखवां गांव जो था वहां कि हज़रत मियां जमालुद्दीन साहिब और हज़रत मियां ख़ैर दीन साहिब रहा करते थे वह उन से परिचित थे। तो यह लोग लिट्रेचर पढ़ने के बाद उन के पास ले गए। उन्होंने ने कहा कि हां हम ने तो स्वीकार कर लिया है। तुम लोग स्वीकार कर लो। अत: चौधरी मुहम्मद खान साहिब सेखवां से सीधे कादियान चले गए। कादियान पहुंच कर आप ने बैअत का निवेदन किया। जो स्वीकार हुई और इस तरह आप बैअत कर के अहमदिया जमाअत में शामिल हो गए। बैअत के बाद कहते हैं कि एक दिन चौधरी मुहम्मद खान साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के पांव दबा रहे थे तो उन्होंने झिझकते हुए निवेदन किया कि हुज़ूर मुझे कोई वज़ीफा बता दें जिस से मेरा धर्म और दुनिया दोनों संवर जाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि हमारी वज़ीफा यही है कि नमाज़ संवार कर अदा किया करो। इस्तिग़फार बहुत अधिक किया करो। बाद मैं फिर एक बार इसी तरह पांव दबाते हुए आप ने दोबारा निवेदन किया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि इस्तिग़फार और दरूद शरीफ बहुत अधिक पढ़ा करो। अत: आप सारी आयु इस पर अनुकरण करते रहे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने भी यही रिवायत लिखी है।

यह पहली बातें तो इन के दादा की बताई थीं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहस्सिलाम के हवाले से थीं। आदरणीय ख़ालिद सैफुल्लाह साहिब के बारे में यह है कि अपनी नौकरी के सिलसिले में जहां भी रहे जमाअत की सेवाओं को करते रहे जिन में यह सदर सदस्य स्टैंडिंग कमेटी बराए शत वर्षीय जूबली भी रहे हैं। ख़ुद्दामुल अहमदिया की केन्द्रीय कमेटी शूरा के दस्तूर कमेटी के सदर भी रहे। महासचिव अहमदिया जमाअत फैसलाबाद भी रहे। वित्त सचिव, केंद्रीय अहमदिया इंजीनियरिंग एसोसिएशन भी रहे था। सदर हल्का सिविल लाइन, लाहौर और तर्बेला भी रहे। बिन गाज़ी लीबिया का अमीर जमाअत भी रहे हैं। अंसारुल्ला ऑस्ट्रेलिया के सदर थे। नायब अमीर जमाअत अहमदिया ऑस्ट्रिलिया भी रहे थे और महमूद बंगाली साहिब की मौत के बाद, मैंने कुछ वर्षों तक ऑस्ट्रेलिया के लिए अमीर निर्धारित किया था। इस की भी उन्होंने बहुत उत्तम रंग में ख़िदमत की तौफीक़ पाई। ख़िलाफत से उन्हें असाधारण वफा तथा इताअत का संबन्ध था। कई अन्य सेवाएं हैं, बहरहाल भरपूर जीवन बिताया। बहुत विद्वान थे। उनके निबन्ध जमाअत के अख़बारों तथा पत्रिकाओं में भी छपा करते थे। लेकिन बहुत सरल थे। हर समय मुस्कुरात रहने वाले इंसान थे। अल्लाह तआला उन से क्षमा का व्यवहार फरमाए। मरहूम मूसी था

पीछे रहने वालों में, तीन बेटियां और दो बेटे यादगार छोड़े हैं। और आपके बड़े बेटे मुहम्मद उमर खालिद साहिब तो यहीं ब्रिटेन ही हैं मडर्न के सदर हल्का हैं। छोटा बेटा अहमद उमर ख़ालिद आस्ट्रलिया में राष्ट्रीय सचिव वक्फे जदीद के रूप में कार्य कर रहा है। बाकी उन की बेटियां भी हैं। अल्लाह तआला उन की सब औलादों को उन नेकियों पर चलने की तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

महोदय ने पूछा कि क्या आप गोथेनबर्ग में तशरीफ ले गए हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , इस सफर में तो अभी तक नहीं जा सका हूं लेकिन स्टॉकहोम से गोथनबर्ग जाने का ही प्रोग्राम है हालांकि, ग्यारह साल पहले जब मैं स्टॉकहोम पहली बार यहां आया हूं उस समय गोथनबर्ग गया था। बहर हाल यहां स्टाकहोम में पहली बार आया हूं।

एक प्रोफेसर ने पूछा कि क्या स्वीडन में जमाअत अहमदिया की संख्या बढ़ रही है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "आप यह नहीं कह सकते कि बहुत बड़ी संख्या में वृद्धि हुई है। हालांकि, कुछ हद तक बढ़ रही है। हाल ही में, पाकिस्तान के बहुत सारे शरणार्थी यहां आकर आबाद हुए हैं और मध्य पूर्व के विभिन्न देशों मलेशिया में और थाईलैण्ड में पुनर्स्थापित किया गया था।

एक महिला प्रोफेसर ने पूछा कि ब्रिटेन में आपकी जमाअत कितनी बड़ी है? मैंने सुना है कि वहां भी सारे देश में आप की मस्जिदें हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : वहां लगभग 35,000 अहमदी हैं, जिनमें से अधिकांश लन्दन में हैं। लेकिन अहमदी पूरे देश में फैले हुए हैं। इसी तरह वहां के लगभग सभी बड़े शहरों में हमारी मस्जिदें और केंद्र हैं। ब्रिटेन में हर साल लगभग दो से तीन मस्जिदों का निर्माण किया जा रहा है।

उसके बाद एक प्रोफेसर ने सवाल किया कि शियों के ख़िलाफ जो नफरत बढ़ रही है उसके विषय में आपकी क्या राय है। और जिस तरह शियों के ख़िलाफ नफरत बढ़ रही है इसका अहमदियों के साथ क्या संबंध है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यद्यपि सुन्नी मुसलमानों के अन्दर भी बहुत सारे समुदाय हैं। परन्तु ये सब कहते हैं कि शीया लोग वास्तविक शिक्षा से हटे हुए हैं और इस्लाम की सही शिक्षाओं का पालन नहीं करते हैं और हमारे बारे में भी उन का यही विचार हैं। शिया लोगों की अपनी धारणाएं हैं जिन्हें वे कई शताब्दियों से मानते चले आ रहे हैं। जबकि हमारा विश्वास है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार अंतिम दौर में एक व्यक्ति ने इस्लाम को पुन: जीवित करने के लिए आना था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसे व्यक्ति को मसीह और महदी कहा है। अत: हम मानते हैं कि वह व्यक्ति आ गया है और उस व्यक्ति की स्थिति नबी की स्थिति है। हमारे विरोधियों में से अधिकांश का सम्बंध विभिन्न सुन्नी संप्रदायों से है। लेकिन सुन्नी और शिया दोनों हमारे ख़िलाफ हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई भी नबी नहीं आ सकता है। और यही कारण है कि वे हमारे ख़िलाफ हैं। लेकिन हम तर्क देते हैं कि अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी और कुछ निशानों की भी सूचना दी गई थी। अत: जब आप जमाअत अहमदिया की बात करते हैं या मसीह मौऊद और महदी मअहूद की बात करते हैं तो इस का भविष्यवाणी के अनुसार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहले ही फरमा चुके थे। अगर हम इन मान्यताओं पर विश्वास करते हैं, तो इसके पीछे मज़बूत तर्क हैं। बहरहाल हमारे और अन्य मुसलमानों के बीच कुछ बातों पर मतभेद तो है लेकिन उसके बावजूद दुनिया भर से सुन्नी मुसलमान और शिया मुसलमान जमाअत अहमदिया में शामिल हो रहे हैं।

उस पर एक महिला प्रोफेसर ने सवाल किया कि सुन्नी और शिया में से जो लोग आप की जमाअत में शामिल हो रहे हैं क्या उनका संबंध सुन्नियों और शियाओं के किसी विशेष विचारधारा या संप्रदाय से है?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने जवाब फ़रमाया कि सुन्नियों और शियाओं के किसी विशेष विचारधारा से संबंध रखने वाले लोग हमारी जमाअत में शामिल नहीं हो रहे बल्कि विभिन्न मतों से संबंधित लोग शामिल हो रहे हैं। जो भी हमारी मान्यताओं और तर्कों को समझता है, वे हमारी जमाअत में शामिल हो जाता है।

इस पर, महोदय ने पूछा कि आपकी जमाअत में शामिल होने का तरीका क्या है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तरीका यही है कि जमाअत अहमदिया में प्रवेश होने वाला बैअत करता है और कहता है कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर विश्वास करता हूं और जमाअत में शामिल होता हूं और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को वही मसीह मौऊद और इमाम महदी मानता हूँ जिस की भविष्यवाणी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाई थी। इसके अलावा हम तो वही कलमा पढ़ते हैं जो अन्य मुसलमान पढ़ते हैं यानी ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह। हम भी वही कुरआन पढ़ते हैं और इसी पर विश्वास रखते हैं। हम भी इस्लाम के इसी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर विश्वास रखते हैं और उन्हें ख़ातमन्नबिय्यीन मानते हैं अत: विश्वासों के आधार पर अगर देखा जाए तो सिवाय उसके कि हम उस व्यक्ति पर विश्वास रखते हैं जिसके संबंध में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि वह मसीह और महदी होगा हमारे और अन्य मुसलमानों के बीच कोई अंतर नहीं है। या आप कह सकते हैं कुरआन आप कह सकते हैं कुरआन की कुछ आयतों हैं जिनकी व्याख्या अहमदी मुसलमान अन्य मुसलमानों से अलग करते हैं बल्कि यह कहना चाहिए कि सही करते हैं। क्योंकि जो तफ्सीर हम बताते हैं कुरआन की अन्य आयतें उसका समर्थन करती हैं लेकिन इस्लाम के कुछ संप्रदाय या मौलवी या कुछ मतों से संबंधित लोग इन आयतों की अपनी व्याख्या करते हैं।

एक प्रोफेसर ने कहा कि इस्लाम की अन्य फिर्कों में यह विचार पाया जाता है कि महदी आख़री ज़माना में होगा। आप लोग इसके बारे में क्या सोचते हैं?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : ये लोग समझते हैं कि जब दुनिया खत्म होने के क़रीब होगी तो मसीह आसमान से नाज़िल होगा और महदी पृथ्वी में ही पैदा होगा। उन के निकट महदी और मसीह दो अलग-अलग व्यक्तित्वों के नाम हैं जो एक-दूसरे के साथ मिल कर इस्लाम का विरोधियों का ख़ात्मा करेंगे। सवाल यह उठता है कि जब दुनिया वैसे ही खत्म होने को हो रही होगी तो इन दोनों का क्या काम है? जब दुनिया ही ख़त्म हो जाएगी तो यह कैसे इस्लाम का सुधार करेंगे। या किसे कहेंगे कि इस्लाम स्वीकार कर लो? भटके हुए मुसलमानों को कैसे निर्देशित देंगे? अत: हम यह कहते हैं कि अंतिम समय से मुराद वे दिन नहीं जब दुनिया खत्म हो रही होगी बल्कि इससे मुराद चौदहवीं सदी है। क्योंकि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि तेरहवीं शताब्दी के दौरान, मसीह और महदी प्रकट होंगे। फिर कुरआन में भी अंतिम दिनों के लक्षणों का वर्णन किया गया है। कुरआन करीम में आता है कि आख़री दिनों में आवागमन के माध्यम बहुत हो जाऐंगे। और यह निशान आज पूरा होता हम देख रहे हैं। ऊंटों और घोड़ों की सवारी को छोड़ दिया गया है और उनकी जगह समुद्री और हवाई जहाज़, कारों, ट्रेनों और बसों ने ले ली। इसी तरह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक और निसानी के पेशगोई फरमाई कि उस ज़माने में रमज़ान के महीने की विशेष तिथियों में चन्द्र और सूर्य ग्रहण लगेगा और 1894 ई में रमज़ान के महीने में यह निशान पूरा हुआ जब चाँद ग्रहण लगने के दिनों में पहले दिन चाँद ग्रहण लगा और फिर इसी माह की अट्ठाईस तारीख़ सूर्य ग्रहण लगा। अत: 1894 में पेशगोई के अनुसार यह दोनों ग्रहण एक ही महीने में धरती के पूर्वी भाग पर लगा और फिर 1895 ई में ग्रहण का निशान पश्चिमी भाग पर लगा और अन्य देशों को देखा गया। अत: जब यह निशान प्रकट हुए, तो दावा करने वाला भी मौजूद था। हम कहते हैं कि जब निशान पूरे हो चुके और दावा करने वाला भी मौजूद होता था, तो इसे स्वीकार न करने का कोई सवाल ही नहीं रहता। अत: आखरी ज़माना से यह मतलब नहीं है कि जब दुनिया खत्म हो जाएगी। अन्यथा उस समय मसीह और महदी का क्या फायदा है? यदि यह सच है कि आने वाले लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए उन्हें मार्गदर्शन देने के लिए आएगा, तो फिर लोग ख़ुदा तआला से पूछेंगे कि हमारे अन्दर तब्दीली पैदा करने का कोई अवसर नहीं दिया गया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मेरे निकट दुनिया की समाप्ति के समय मसीह और महदी का प्रकट होना एक बुद्धि से हट कर बात है।

उसके बाद, एक प्रोफेसर ने पूछा कि आप की जमाअत अहमदिया क्या स्थिति है? क्या आपका काम केवल धार्मिक मुद्दों तक ही सीमित है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : ख़लीफा तो नबी का उत्तराधिकारी होता है। उस का फर्ज़ होता है कि उन सभी ज़िम्मेदारियों को अदा करे जो नबी को सौंपी जाती हैं। और ये ज़िम्मेदारियां क्या हैं? एक व्यक्ति को अपने ख़ालिक के क़रीब लाना और दूसरा मानव जाति को अल्लाह तआला के अधिकारों को अदा करने की तरफ ध्यान दिलाना और फिर इस्लाम का सन्देश फैलाना, अत: ये ख़लीफा के कर्तव्य हैं। ख़लीफा एक रूहानी रहनुमा होता है न

कि सांसारिक हुकूमतों की तरह को ई इंतजाम करने वाला। हां जहां तक इस की जमाअत का सम्बन्ध है तो वह अपनी जमाअत का इतंज़ामी प्रबन्धक होता है परन्तु हुकूमत के मामलों का प्रशासनिक प्रमुख नहीं होता। हमारी मान्यताओं के मुताबिक धर्म और सरकार दोनों अलग-अलग चीजें हैं। प्रत्येक सरकार अपने मामले अपने सिस्टम के अनुसार चलाएगी। यदि ये सरकारें अहमदी होंगी तो एक हाथ के नीचे जमा होंगी और आध्यात्मिक रूप से उन का मार्ग दर्शन एक ख़लीफा के माध्यम से किया जाएगा।

एक प्रोफेसर महिला जो कि islamic education की विशेषज्ञ हैं उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से सवाल किया कि क्या आप लोगों के अपने स्कूल हैं जहां अपना पाठ्यक्रम पढ़ाते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , "इस समय यूरोप या अन्य पश्चिमी देशों में हमारे स्कूल नहीं हैं। अफ्रीका में स्कूल हैं लेकिन वे धार्मिक स्कूल नहीं हैं। वहाँ दुनियावी तालीम के साथ कुरआन , बाइबिल और अन्य धर्मों के प्राथमिक शिक्षा दी जाती है और जहां तक कोई विशेष धार्मिक पाठ्यक्रम का संबंध है तो जर्मनी के एक क्षेत्र प्रशासन ने मुसलमानों के विभिन्न संप्रदायों से कहा था कि वे इस्लाम के हवाले से पाठ्यक्रम बनाएं जो छात्रों को स्कूलों में पढ़ाया जा सके। वहां हमने अपने पाठ्यक्रम भी तैयार कर के दिया था तो उन्होंने हमारे पाठ्यक्रम को स्वीकार कर लिया और वही स्कूलों में पढ़ाया जा रहा है। इस कोर्स में विवादित मामलों को लेने के बजाय, हमने कुरआन और हदीस रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम के वास्तविक इतिहास को लिया, जो कि हम सब के बीच समान है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इसके अलावा, हमारे मिशनरी प्रशिक्षण कॉलेज हैं। यूरोपीय देशों में से एक जर्मनी में है। एक ब्रिटेन में है। एक कनाडा में भी है इसी तरह अफ्रीका में भी एक अंतर्राष्ट्रीय मिशनरी प्रशिक्षण कॉलेज भी है। फिर इंडोनेशिया है इसी तरह, छोटे पाठ्यक्रमों के लिए दुनिया के कई देशों में ये कालिज स्थापित हैं।

हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला काशिफ महमूद विर्क साहिब मुबल्लिग़ सिलिसला की तरफ इशारा करते हुए कहा कि उन्होंने यू.के के मिशनरी प्रशिक्षण कॉलेज से भी अध्ययन किया है। शायद यह इस प्रशिक्षण कॉलेज के पहले स्नातक हैं। तो आप कह सकती हैं कि इन की गिनती इस कालेज के शुरुआती छात्रों होती है।

उसके बाद, एक प्रोफेसर ने पूछा, पाकिस्तान और बांग्लादेश में सरकार के साथ सम्बन्धों के संदर्भ में जमाअत अहमदिया के साथ कोई सुधार हुआ है?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जहां तक बांग्लादेश की सरकार के साथ जमाअत के संबंध की बात है तो हमारा वहाँ सरकार के साथ हमारा बड़ा अच्छा संबंध है क्योंकि बांग्लादेश में जमाअत के ख़िलाफ कोई कानून नहीं है। लेकिन जहां तक पाकिस्तान का सवाल है, तो पाकिस्तानी सरकार ने 1974 ई में अहमदियों के ख़िलाफ कानून बना दिया है कि कानून और संविधान के रास्ते में कोई मुस्लिम नहीं है। तो अहमदियों के ख़िलाफ एक कानून है। और इस कानून में और अधिक हाशिए ज़याउल हक मार्शल लॉ के युग में हुए। पहले तो केवल संसद ने कानून पास किया कि हम मुसलमान नहीं हैं लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता संसद जो चाहे समझे हम तो अपने आप को मुसलमान समझते हैं लेकिन ज़िया उल हक ने जो नियम लागू किए उनके अनुसार हम अपने आप को मुसलमान नहीं कह सकते हम अपने बच्चों को मुसलमानों के रूप में नहीं रख सकते हैं। हम अपनी मस्जिदों को मस्जिद नहीं कह सकते हैं। यहां तक इक इस्लामी तरीका के अनुसार अस्सलामो अलैकुम नहीं कर सकते। अत: जहां तक ये नियम हैं और उनकी आड़ पर हम पर अत्याचार को दौर जारी है इस समय तक पाकिस्तान में हमारी परिस्थितियां और हालात किस प्रकार सुधार हो सकता है। लेकिन बांग्लादेश की स्थितियां अलग हैं इसलिए की इस का सरकार की नीति से संबंध है। बांग्लादेश की मौजूदा सरकार के साथ जमाअत के साथ बहुत अच्छा संबंध है।

एक पादरी ने सवाल किया कि एक 10 वर्षीय मुस्लिम बच्चे चर्च में आए थे। मैंने उनसे कहा कि हम इस तरह से बपतिस्मा देते हैं। इस पर एक बच्चे ने पूछा, "जब एक मुसलमान बच्चा पैदा होता है और आप उसे बपतिस्मा दें तो क्या उसे मुसलमान कहा जाएगा?" इस पर मैंने उस बच्चे को बताया कि मुझे नहीं पता। लेकिन अगर मैं बपतिस्मा देता हूं, तो शायद बच्चे को ईसाई कहा जाएगा या शायद उसे मुसलमान कहा जाता है। महोदय ने कहा कि ऐसी स्थिति में आप का क्या उत्तर होगा?

इस हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हर पैदा हुआ बच्चा सही फितरत पर पैदा होता है। धार्मिक रूप से न तो वह मुसलमान है न ही ईसाई या यहूदी है, लेकिन इसकी प्रकृति नेक होती है। लेकिन फिर अपने माता-पिता का जैसे चाहें उस का लालन पालन करें। अत: जिस को भी आप बपतिस्मा देते हैं, वे ईसाई कहलाएगा । लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि कोई ईसाई नेक प्रकृति नहीं हो सकता। अत: मेरे निकट, हर बच्चा नेक प्रकृति पर पैदा होता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ भारतीय राजदूत को सम्बोधित होते हुए फरमाया कि जमाअत अहमदिया का आरम्भ भारत से हुआ था। पंजाब के एक छोटा से गांव कादियान से हुआ था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया वैसे तो मैं दिल्ली से हूं, लेकिन मूल रूप से मैं पूर्वी बंगाल से संबंधित हूं।

महोदय ने कहा कि भारत में आपकी जमाअत की मौजूदगी से पता चलता है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है और हम मानते हैं कि हर धर्म का सम्मान किया जाना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "यह सही बात है।" भारत की वर्तमान सरकार के साथ जमाअत के अच्छे सम्बन्ध हैं।

भारतीय राजदूत ने कहा कि हाल ही में सूफियों के वैश्विक सम्मेलन के अवसर पर हमारे प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट बयान में कहा कि इस्लाम एक शांति का धर्म है और इसे झूठे धर्म के रूप में दुनिया में उपद्रव के धर्म के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह बिल्कुल सही है। हर धर्म की वास्तविक शिक्षा शांति, प्रेम और सद्भाव पर आधारित है। ख़ुदा तआला से प्यार करो और मानव जाति से प्यार करो।

उसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने स्वीडन में इज़राइली राजदूत को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी जमाअत भी इज़राईल में भी है।

महोदय ने कहा कि यह हमारे लिए बहुत गर्व का विषय है कि इस्लाम का एक शांतिपूर्ण संप्रदाय हमारे देश में मौजूद है। मैं इसके लिए भी आपको धन्यवाद देता हूं।

महोदय ने कहा कि यहां स्वीडन में हमारे अहमिदयों के साथ बहुत अच्छे संबंध हैं। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्वीडन में अन्य मुसलमानों के साथ ऐसा कोई सामुदायिक संबंध नहीं है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जो अहमदी इज़राइल में रह रहे हैं वे अन्य मुसलमानों और यहूदियों के बीच मध्यस्थता में भूमिका निभा रहे हैं।

महोदय ने कहा: हम कोशिशों के बावजूद स्वीडन में अन्य मुसलमानों के साथ सहयोग नहीं कर सके। ये लोग यहूदियों से कोई संबंध नहीं रखना चाहते हैं। यही कारण है कि मैं बहुत आभारी हूं कि आप न केवल शांति को बढ़ावा देने में रुचि रखते हैं बल्कि इन शिक्षाओं का भी पालन करते हैं।

उसके बाद एक प्रोफेसर ने पूछा, मुसलमान देशों में तथा अन्य स्थानों पर भी महदी होने के दावेदार मौजूद हैं। जैसे सुडान में एक व्यक्ति ने महदी होने का दावा किया था। इसी प्रकार 1979 में, सऊदी अरब में भी किसी ने महदी होने का दावा किया। जमाअत अहमदिया का इन दावेदारों के बारे में क्या राय है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : दावेदार कई हो सकते हैं। लेकिन यह देखना चाहिए कि दावेदार किस हद तक सफल रहा है? जैसा कि मैंने पहले कहा था, अल्लाह तआला के रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महदी के प्रकट होने के बारे में कुछ निशानों की भविष्यवाणी की है जो चौदहवीं शताब्दी में पूरी हो गईं और उस समय महदी का दावा करने वाला भी मौजूद था। इस समय तो किसी और ने दावा नहीं किया। इसके अलावा, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि ने भविष्यवाणी की थी कि मसीह और महदी एक ही व्यक्ति होंगे जब कि इन दावा करने वालों में से केवल एक ने महदी होने का दावा किया था। लेकिन हदीसों से साबित होता है कि एक ही आदमी को दोनों ख़िताब दिए जाएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : दूसरी बात यह है कि महदी का दावा करने वाले ये लोग कहां तक गए हैं?" दुनिया के कितने देशों में पहुंचे हैं? लेकिन जमाअत अहमदिया पिछले 127 वर्षों में निरंतर

विकास की मंज़िलें तय कर रही हैं और दुनिया भर में इस का संदेश फैल रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह भी संभव है कुछ नेक और औलिया भी हूँ और उनके मानने वालों ने उन को महदी का उपनाम का उपनाम दिया हो मगर ऐसे लोग केवल विशेष क्षेत्र और विशेष लोगों के लिए थे।

उसके बाद, एक प्रोफेसर ने सवाल करते हुए पूछा जमाअत अहमदिया में भी दो संप्रदाय हैं। एक वे जिन का सम्बन्ध कदियान से है और दूसरे जो लाहौरी कहलाते हैं। उन का आपस में क्या सम्बन्ध है?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: लाहौरी अहमदी ख़िलाफत की प्रणाली को नहीं मानते और यही कारण था वह जमाअत से अलग हुए। वे कहते हैं कि जमाअत के प्रबंधन के मुद्दों की बागडोर एक ख़लीफा के हाथ में नियंत्रित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि एक समूह या कुछ लोगों का गिरोह यह करे। लेकिन हम कहते हैं कि नबी के बाद, ख़िलाफत की प्रणाली स्थापित होती है। अत: यह मुख्य कारण है कि वह जमाअत अहमदिया से अलग हो गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "जहां तक हमारे आपस के सम्बन्धों का प्रश्न है तो हम लोग जब भी आपस में मिलते हैं तो अच्छा मिलते हैं। बल्कि दो साल पहले मैं बर्लिन में उन की मस्जिद में भी गया था, और इस मस्जिद के इमाम ने मुझे अच्छा मेरा स्वागत किया। उन्होंने हमारे प्रयासों की सराहना की और वे हमारे प्रोग्रामों में भी शामिल होते रहते हैं। हमारे बीच बहुत अधिक द्वेष और शत्रुता नहीं है। लेकिन तथ्य यह है कि हमारा समुदाय बढ़ रहा है और वे दिन प्रतिदिन कम हो रहे हैं। वास्तव में, उनमें से एक अच्छी संख्या हमारी जमाअत में शामिल हो गई है।

उसके बाद, एक प्रोफेसर ने सवाल किया कि आप ने थोड़ी देर पहले कहा कि खलीफ एक आध्यात्मिक नेता होता है। तो जमाअत अहमदिया और आपके निकट बाकी दुनिया को इस समय रूहानी तौर पर सबसे बड़ी चुनौती क्या है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "ये आप के साथ पादरी बैठे हुए हैं। यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि लोग अपने वास्तविक निर्माता से दूर होते जा रहे हैं और अपने निर्माता के अधिकारों को भूल रहे हैं। इसलिए सब से बड़ी चुनौती यही है कि मानव जाति को उस के निर्माता के निकट लाया जाए। क्योंकि कुरआन के अनुसार, मनुष्य के सृजन का मुख्य उद्देश्य यही है कि अपने निर्माता के सामने सिर झुकाया जाए। यदि यह आपके जन्म का प्राथमिक उद्देश्य है तो यह सबसे बड़ी चुनौती होगी।

महोदय ने पूछा कि इस बारे में क्या कठिनाईयों में कोई वृद्धि हुई है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : कठिनाइयों में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। कहा जाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में ही केवल कुछ साल पहले तक 77% लोगों के पास धर्म के बारे में प्रवृत्ति रखते थे या कम से कम उनका ईसाई धर्म पर विश्वास था। और अब यह संख्या पचास प्रतिशत के लगभग रह गई है। और अधिक कम हो रही है। आपने ख़ुद देखा होगा कि नास्तिकों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है, और धर्म के मानने वालों में निरन्तर कमी आ रही है। तो यह हम सभी की आम चुनौती है। सबसे पहले तो लोगों को उन के वास्तविक निर्माता के निकट लाया जाए और फिर तय करना चाहिए कि कौन से धर्म का पालन करना है।

इस के बाद, एक प्रोफेसर ने पूछा कि आपका पर्यावरण के बारे में क्या विचार है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि पर्यावरण से अभिप्राय पर्यावरण का बदलना है, तो इसका मुख्य कारण संतुलन की कमी है। कुदरत ने सब चीजों के अन्दर संतुलन रखा है। जैसे-जैसे दुनिया की आबादी बढ़ रही है, हम हर भर जंगलों को काट रहे हैं और नए शहरों और कस्बों का निर्माण कर रहे हैं और लगातार उन्हें बढ़ाते जा रहे हैं। दूसरी ओर, उद्योगिक क्रांति है। इस कारण से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। अत: हमारे लिए आवश्यक है कि हम इन में संतुलन रखें।

और दूसरा शांति की कमी है। अगर शांति नहीं होगी और लोग एक-दूसरे से लड़ेंगे और एक-दूसरे को मारेंगे। तो जहां जिंदगी ही नहीं होगी तो वहां पर्यावरण क्या करेगा?

एक प्रोफेसर ने पूछा कि आप जमाअत अहमदिया के फिक्ही मस्लों को कैसा हल करते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "हम लोग बुनियादी तौर पर हन्फी फिक्का को मानते हैं और जब हम कुछ चीज़ें इस तरह की देखते हैं कि उन की हल फिक्का हन्फी में नहीं है तो फिर कुरआन मजीद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों की रौशनी में उन को हल करने की कोशिश करते हैं कुछ एक ही बातें होंगी जिन में हमारा और हनफियों का मतभेद होगा।

इस पर एक प्रोफेसर ने कहा कि आप कि मक्का के अतिरिक्त भी हज के कोई स्थान हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : नहीं और कोई स्थान नहीं जो मक्का के बदला में हो सकते।

इस पर महोदय ने कहा कि मक्का के बदला में नहीं बल्कि कई बार लोग मज़ार आदि पर जाते हैं इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा कि मज़ार तो नहीं लेकिन हमारे भी कुछ पवित्र स्थान हैं जैसा कि कादियान जो कि अहमदिया जमाअत के बानी का स्थान है यह हमारे लिए बहुत पवित्र है क्योंकि वह वहां पैदा हुए और वहां रहे और वहां पर दफन हैं। परन्तु आप यह नहीं कह सकती कि कादियान और मक्का का कोई मुकाबला है

एक प्रोफेसर ने पूछा कि आप को आप से पहले वाले ख़लीफा ने ख़िलीफत के लिए नामांकित किया था?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हमारी एक चयन की मज्लिस होता है जिनके सदस्य अहमदिया जमाअत के सदस्य होते हैं। इन सदस्यों में केंद्रीय अधिकारी, देश के अमीर, और कुछ वरिष्ठ मुबल्लिग़ शामिल होते हैं ख़लीफा की मृत्यु के बाद वे इकट्ठे होते हैं और नया ख़लीफा चुनते हैं। ख़िलाफत के लिए नाम पेश किए जाते हैं और उन्हें वोट दिया जाता है और इस कार्रवाई की नियमित रिकॉर्डिंग की जाती है। बिल्कुत इसी तरह जिस तरह पोप का चयन किया जाता है। लेकिन हमारे पास कोई चिमनी नहीं होती जिसमें से धुआं निकलता हो, जब ख़लीफा का निर्वाचित होता है, तो जमाअत के लोग नए ख़लीफा की बैअत करते हैं।

एक प्रोफेसर ने सवाल करते पूछा कि जमाअत अहमदिया किन क़ौमों पर आधारित है? क्या अधिकांश लोगों का सम्बन्ध दक्षिण एशिया से है या क्या कोई अन्य भी देश हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मेरा विश्वास है कि इस समय अफ्रीकी अहमदियों की संख्या हिन्द तथा पाकिस्तान के अहमदियों से अधिक है। यद्यपि पाकिस्तान और भारत के अहमदी अमेरिका, यूरोप और बाकी दुनिया में फैल रहे हैं, परन्तु अफ्रीकी अहमदियों की संख्या बढ़ रही है। फिर मध्य पूर्व एशिया में अहमदियों की बहुत संख्या है जैसे इंडोनेशिया और मलेशिया आदि हैं।

एक महिला प्रोफेसर ने कहा, "जमाअत अहमदिया में महिलाओं की भूमिका क्या है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जमाअत अहमदिया में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस है जन्नत मां के कदमों तले है। "इस का अर्थ है कि अगर औरतें बच्चों की तालीम तथा तरबियत में सही भूमिका अदा नहीं कर रहीं तो वे न केवल जन्नत से वंचित हो रही हैं बल्कि अपने बच्चे को भी जन्नत से वंचित कर रही हैं। अत: यही बुनियादी उसूल है इसी कारण के हम ने जमाअत के अन्दर औरतों की एक अलग संस्था है जिन की हर देश में देश की सदर होती हैं और अन्य उहेदेदार होते हैं। ये लोग अपने जलसे करते हैं। इसके अतिरिक्त भी जो जमाअत के प्रोग्राम होते हैं इस प्रकार के प्रोग्रामों में भी औरतों के लिए अलग समय रखा जाता है जिसमें वे अपनी तकरीरें आदि करती हैं और फिर बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण, उनके आध्यात्मिक तरबियत अपनी सेहत और उनके स्वास्थ्य और अन्य ऐसे कार्यक्रमों के बारे में काम करती हैं। तो हमारी जमाअत में महिलाओं की बहुत बड़ी भूमिका है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया, "हमारी जमाअत के भीतर साक्षरता के मामले में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में अधिक है। अत: जब तक आप के पास पूर्ण ज्ञान न हो आप अपने बच्चों को प्रशिक्षित नहीं कर रही

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 18 October 2018 Issue No. 42

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हैं जो महिलाओं के लिए महत्त्वपूर्ण है। हमारी महिलाएं अच्छी शिक्षित हैं। उनमें इंजीनियर, डॉक्टर, आर्किटेक्ट्स और प्रोफेसर भी हैं। यहां तक कि तीसरी दुनिया में से हमारी महिलाओं में से 99.9 प्रतिशत प लिखी औरतों में गिनती होती ही के देशों में सचमुच मादाएं हैं, जबकि पुरुष इसके मुकाबला में केवल 9 0% हैं। साक्षरता दर का मतलब यह नहीं है कि आपको कुरआन करीम पढ़ना आता है तो आप साक्षर गिनी जाऐंगी। बल्कि साक्षरता का मतलब है कि आपने कम से कम माध्यमिक विद्यालय का अध्ययन किया है।

एक प्रोफेसर से सवाल करते हुए पूछा कि सि समय यूरोप एक मुश्किल दौर से गुज़र रहा है, जबकि यूरोप को शरणार्थी संकट से गुज़रना पड़ रहा है। क्या आपको लगता है कि यूरोप के भीतर एकीकरण में जमाअत अहमदिया को कोई परेशानी का सामना करना पड़ता है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: "मैं अक्सर बहुत से लोगों से पूछता हूं कि मुझे एकीकरण की परिभाषा बताएं। जहां तक जमाअत अहमदिया का संबंध है, तो मुझे लगता है कि हम लोग सहीह तौर पर समाज का हिस्सा हैं, क्योंकि मेरे निकट एकीकरण का मतलब है कि हम देखें हैं कि जिस देश में हम रह रहे हैं? उस के लिए क्या कर रहे हैं। यदि हम देश के विकास के लिए हमारी सभी क्षमताओं और गुणों का उपयोग कर रहे हैं, तो इसका मतलब है कि हम एकीकरण कर रहे हैं। यूरोप में, हमें काफी सराहा जाता है यहां स्वीडन में और जर्मनी और हर जगह अहमदी औरतों और मर्दों की बड़ी संख्या है जो पढ़े लिखे हैं और उन्हें समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। इसलिए, एकीकरण के कारण, मुझे कोई समस्या नहीं दिख रही है जिसके कारण हम परेशान हों। यदि आप शिक्षित हैं, तो आप जानती हैं कि आपके लिए क्या अच्छा और क्या बुरा है।

एक प्रोफेसर ने पूछा कि जमाअत अहमदिया का मिशन क्या है? क्या आप अपनी कोई एक क़ौम बनाना चाहते हैं?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जमात अहमदिया का मिशन यही है कि दुनिया का हर व्यक्ति अपने वास्तविक निर्माता के सामने सर झुकाने वाला हो जाए। यदि यह लक्ष्य हासिल हो जाए तो हमें कोई क़ौम बनाने की ज़रूरत नहीं है। हमें देशों पर कब्ज़ा करने की ज़रूरत नहीं है। यदि सभी लोग अल्लाह तआला को पहचाने लग जाएं और अल्लाह के बन्दों के अधिकार अदा करने वाले बन जाऐं तो प्रत्येक की इच्छा होगी कि वह आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़े। यह वह संदेश है जिसे हम फैला रहे हैं। मुझे स्वीडन या जर्मनी या किसी अन्य ताकत की कोई लालच नहीं है। यही कारण है कि संस्थापक जमाअत अहमदिया ने अपनी कविताओं में से एक में कहा:

मुझ को क्या ताजों से मेरा मुल्क है सब से जुदा
मुझ को क्या मुल्कों से मेरा ताज है रिज़वाने यार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: "मैं तो यही कहूंगा कि सांसारिक ताकतों को इस्लाम अहमदियत से भय खाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम हर लिहाज़ से एक आध्यात्मिक जमाअत हैं।

इस के, एक प्रोफेसर ने पूछा कि क्या आपको लगता है कि अगली दुनिया पर अधिक ध्यान देने से इस दुनिया पर ध्यान केंद्रित करने की संभावना कम नहीं होगा?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि आप इस संसार में आए हैं तो आप के सुपुर्द कुछ ज़िम्मेदारियां हैं जो आप ने अदा करने हैं। आप के कुछ कर्तव्य हैं जो आप ने अदा करने हैं और आप अगर ये फर्ज़ ख़ुदा तआला की रज़ा के लिए कर रहे हैं तो आप को इन कामों का बदला इस दुनिया और अगली दुनिया में भी मिलेगा। उदाहरण के रूप में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म की एक हदीस है कि अगर आप अपनी पत्नी का ख्याल रखने वाले हैं यहाँ तक कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए उसके मुंह में एक कौर भी डालते हैं, तो आप को इसका बदला मिलेगा। तो यदि आप शांति स्थापित करते हैं और एक दूसरे से प्यार से करते हैं तो इसका इनाम अगली दुनिया में भी मिलेगा और आप इसे दुनिया में पाएंगे। अगर आप अपनी पत्नी से प्यार करते हैं, तो आपका घर शान्ति से रहेगा। आपके बच्चे आराम से रहेंगे और इसके अतिरिक्त आपको अगली दुनिया में इनाम मिलेगा। तो आप यह नहीं कह सकते कि अगली दुनिया पर ध्यान अधिक केंद्रित है। क्योंकि जो भी आप कर रहे हैं वह अल्लाह तआला के लिए है। आपका ध्यान केवल अगली दुनिया पर नहीं है, बल्कि इस दुनिया में भी है।

एक प्रोफेसर ने पूछा कि आप समाज में एकीकरण के बारे में बात कर रहे थे। क्या आपकी जमाअत के लिए एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में मानवता की सेवा करना ज़रूरी है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि बिल्कुल ज़रूरी है हम यूरोप और बाकी देशों में चैरिटी वाक का आयोजन करते हैं। इन के माध्यम से इकट्ठी होने वाली रकम हम लोकल चैरिटी में देते हैं। फिर हमारी अपनी चैरिटी संस्थाएं भी हैं। जिस का नाम ह्ययूमेनटी फर्सट है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया यूरोप के अलावा हम अफ्रीका में बहुत काम कर रहे हैं। हमारे अस्पताल और स्कूल वहां स्थापित हैं। फिर हमने अफ्रीका के दूरस्थ इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए पानी के कुओं को खोदना शुरू कर दिया है ताकि उन्हें स्वच्छ पेयजल मुहैया करा सकें। आप शायद नहीं जानते कि छोटे छोटे बच्चे सिरों पर पानी के मटके रखे कर कई कई मील दूर से पैदल चल कर पानी लाते हैं और वे पानी भी गन्दा होता है जो कई बीमारियों का कारण बनता है। फिर हम मॉडल गांवों का निर्माण भी कर रहे हैं, जिसके भीतर प्रकाश व्यवस्था, पेयजल, सामुदायिक हॉल, सब्जियां इत्यादि उगाने के लिए जल आपूर्ति की प्रणाली होती है। तो ये सुविधाएं हैं जिन्हें हम वहां के स्थानीय लोगों को दे रहे हैं।

इस महिला ने पूछा कि अफ्रीका के किस क्षेत्र में आप इन सुविधाओं को प्रदान कर रहे हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : पश्चिम अफ्रीका के देश हैं। घाना, नाइजीरिया, बुर्किना फासो, माली, आइवरी कोस्ट, गैंबिया, सेनेगल इत्यादि देश हैं। लगभग सभी पश्चिमी अफ्रीकी देशों में काम कर रही हैं। फिर केन्या, तंजानिया और युगांडा, आदि पूर्वी अफ्रीका के देशों में काम कर रहे हैं। फिर मध्य अफ्रीका और अफ्रीका के दक्षिण की ओर भी काम कर रहा है। कांगो कंससा में भी हमारी बहुत बड़ी जमाअत है। फिर दक्षिण अमेरिकी देशों में कुछ परियोजनाएं हैं। हम ग्वाटेमाला में एक बड़ा अस्पताल भी बना रहे हैं।

महोदया ने पूछा कि इन परियोजनाओं के लिए धन कहाँ से उपलब्ध होता है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , जमाअत के लोग वित्तीय कुरबानी करते हैं, और फिर हम चैरिटीज़ के प्रोग्राम आयोजित करते हैं जिनके द्वारा धन इकट्ठा किया जाता है। वर्तमान में हाल ही में, ह्यूमेन्टी फर्सट ने अमरीका में ट्रायथलॉन का आयोजन किया जिस में 1. 5 मिलियन डालर की रकम जमा हुई जिसे ग्वाटेमाला के बनने वाले अस्पताल में खर्च किया जाएगा। फिर हमो अधिकांश काम वकारे अमल के द्वारा हो जाते हैं। इस तरह भी हम पैसे बचाते हैं। अगर किसी कंपनी को एक परियोजना दी जाती है, जिस पर 5 मिलियन खर्च किया जाना है, तो हम इसे स्वयंसेवकों के माध्यम से 1 मिलयन में पूरा करवा लेते हैं।

मुलाकात के अंत पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अगर मेरे पास अधिक समय होता तो मैं ज़रूर आप लोगों के साथ गुज़ारता लेकिन अब मेरा अगला कार्यक्रम है। इस अवसर पर सभी प्रोफेसरों और महिलाओं ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का धन्यवाद किया।

इस तरह यह मुलाकात ग्यारह बजे समाप्त हो गई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास में पधारे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad